ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 03 मई -I-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

परमात्मा द्वारा लहराया परिवर्तन का परचम

परमात्मा का हाथ पकड़, उसे अपने साथ लेकर, उसकी कंपनी में रहकर और उसे ही अपना कम्पैनियन बनाकर वो निकल पड़ीं एक ऐसी आध्यात्मिक रूहानी यात्रा पर... जहाँ से उन्होंने न पीछे मुड़कर देखा, न रुकी, न थकी, न डरी, न संकोच किया जग का। बस चल पड़ीं...। उनकी अंतिम श्वास भी उन्हें बांध नहीं पायी, रोक नहीं पायी। उनकी रूहानियत की खुशबू, उनके प्यार और परमात्म-विश्वास से भरे बोल आज भी सुनने वाले को परमात्म-अनुभूति करा देते। एक बल-एक भरोसे पर जिस वीरांगना ने पूरे विश्व में परमात्म परचम लहराया... वो थीं... उन्हें 'थीं' कहना शायद उनके साथ न्याय नहीं होगा, इसलिए वो 'हैं'... और वो हैं हमारी, हम सबकी, पूरे विश्व की और परमात्मा द्वारा स्थापित इस यज्ञ की जान और जहान की शान 'दादी जानकी'।

राजा जनक के बारे में हम सब ने सुना है, पढ़ा है पर देखा नहीं। लेकिन आज के परिदृश्य में राजा जनक के समान स्वयं को केवल निमित्त समझ, परमात्म-श्रीमत पर परमात्मा द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, जिसे परमात्मा ने 'यज्ञ' नाम दिया, जहाँ सभी अपनी कमज़ोरियों को स्वाहा कर और शक्तियों को धारण कर मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा लेते हैं, इस यज्ञ की मुखिया होने के बाद भी दादी खुद को केवल इस विश्व विद्यालय का एक विद्यार्थी समझतीं। उन्होंने सदा यही कहा कि हम सभी इस विश्व विद्यालय के स्टूडेंट हैं और परमात्मा हमारा शिक्षक। हमें अंतिम श्वास तक यह पढ़ाई पढ़नी है और परमात्मा के कार्य को पूर्ण करना है।

स्वमान को दिया मान

परमात्म-महावाक्य(मुरली) का दिन भर न जाने कितनी ही बार अध्ययन करना और मनन-चिंतन करते हुए उसी में रमण करना उनका स्वभाव सा ही था। और उसी स्वभाव के कारण वो इस ज्ञान में स्वाभाविक और सहज हो गईं। इतनी सहज कि ईश्वरीय महावाक्य का हर वाक्य हर वक्त जैसे कि उनके मुख पर होता। एक बात... जिसको उन्होंने खुद भी पक्का किया और जिससे भी मिलतीं उसे भी पक्का करातीं कि 'मैं कौन और मेरा कौन!' कहतीं... 'मैं बाबा की बाबा मेरा।' कोई भी उनसे मिलने जाता, तो ज्ञान के सुंदर-सुंदर बोल से जैसे कि उसका श्रृंगार ही कर देतीं। सदा एक निश्चय और नशा... कि मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।

परमात्म निश्चय ने किया निश्चिंत

परमात्मा पर ऐसा निश्चय और रूहानी नशा ही उनके सारे लौकिक, दुनियावी बंधनों को तोड़ने का आधार बना। सारी बेड़ियों को तोड़कर दादी इस यज्ञ में आईं और आते ही परमात्मा को अपना सर्वस्व बनाकर न केवल अपने जीवन की डोर परमात्मा के हाथ में थमा दी बल्कि परमात्मा के प्रति अपने अटूट प्रेम, निश्चय और ईश्वरीय सेवाओं के लिए मर मिटने के जज़्बे से परमात्मा को भी अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया, अपने अंग-अंग में उतार लिया। कहते हैं ना... परमात्मा केवल प्रेम और विश्वास का भूखा है, और जिससे उसे सच्चा प्रेम और विश्वास प्राप्त हो जाता, वो उसके अंग-संग उसकी छत्रछाया बनकर रहता। वो उसका साथ कभी नहीं छोड़ता... न जीते जी और न मरणोपरांत।

ईश्वर का हर कार्य... श्रेष्ठ कार्य

इसी निश्चय और नशे से दादी ने यज्ञ में अपनी सेवाओं का आरंभ किया। कम पढ़ी-लिखी पर उच्च आध्यात्मिक ज्ञान से बड़े-बड़े विद्वानों को भी नतमस्तक कराने वाली दादी जानकी ने यज्ञ की छोटी से छोटी सेवाओं को भी ईश्वर का श्रेष्ठ कार्य समझ कर किया। भारत के कोने-कोने में परमात्म-ज्ञान, परमात्म प्रेम और परमात्म निश्चय का परचम लहराते हुए ईश्वरीय शक्ति के साथ-साथ अपनी आत्मिक शक्ति और अलौकिक शक्ति का परिचय दिया।

एक में निश्चय... कोई सवाल नहीं

दादी के इसी लगन, आत्मिक शक्ति और अटूट निश्चय को देखते हुए परमात्मा ने उन्हें विदेश में ईश्वरीय सेवाओं का अगुआ(नायक) चुना। न ज़्यादा लौकिक ज्ञान, न विदेशी भाषा का ज्ञान और न विदेशी रहन-सहन(जीवनशैली) का ज्ञान... पर न कोई झिझक, न सोच-न संकोच और न ही कोई सवाल! एक पल को भी ये ख्याल उन्हें छू नहीं पाया कि मैं वहाँ कैसे और क्या करूंगी... कहाँ जाऊंगी... कैसे होगी वहाँ ईश्वरीय सेवाओं की शुरुआत! पर परमात्म-आज्ञा मिली और उसे ही सिरमाथे रख निकल पड़ीं बेहद विश्व-सेवा की सैर पर।

रूहानी प्रेम-रंग ने रंग लिये हर 'रंग'

एक कहावत सुनी थी, पर दादी ने उस कहावत को सिद्ध करके दिखाया... कि चाहे किसी मनुष्य को अपना बनाना हो या ईश्वर को, तो किसी ज्ञान, भाषा या किसी रिद्धि-सिद्धि की ज़रूरत नहीं... बस सच्चे आत्मिक, रूहानी प्रेम की ज़रूरत है। अपने इसी रूहानी प्रेम और परमात्म निश्चय के रंग ने विदेशी संस्कृति में पले लोगों को भी ईश्वरीय संस्कृति में ढ़ालकर उन्हें परमात्म रंग में रंग दिया। फिर तो जैसे विदेश में भी परमात्म रंग की नदी बह चली और विश्व के हर देश तक पहुंच कर न जाने कितनी ही मनुष्य-आत्माओं को अपने रंग में रंगते हुए अनेकों सेवाकेन्द्रों की स्थापना के निमित्त बनी। दादी की इन्हीं निःस्वार्थ, प्रेम से ओत-प्रोत सेवाओं के परिणामस्वरूप दादी जानकी केवल भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की 'दादी' बन गईं और सारे विश्व में न सिर्फ परमात्म-परचम लहराया बल्कि इसे सबसे ऊँचा रखने के निमित्त बनीं।

सबकी दोस्त बनकर रहीं

2007 में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि के अव्यक्तारोहण पश्चात् दादी जानकी इस संस्थान की मुख्य प्रशासिका बनीं, लेकिन कभी ये भान नहीं आने दिया कि मैं प्रशासिका हूँ तो कुछ भी अपनी मर्ज़ी से चलाऊँ! हमेशा दूसरों को आगे रखा, आगे बढ़ाया, सबकी इच्छा पूछी और हमेशा कहा कि मुझे दादी नहीं, अपना दोस्त समझो। और एक दोस्त की तरह अपनी दिल की हर बात सबसे कहतीं भी और सुनतीं भी। एक स्थान पर बैठकर ही सभी यज्ञवत्सों के दिलों का हाल जान लेतीं, उनकी ज़रूरतों को समझकर उन्हें पूरा कर देतीं। न कभी किसी को अनसुना किया और न कोई कमी रखी। वो सिर्फ संस्थान की प्रशासिका ही नहीं बल्कि सभी के दिलों की प्रशासिका बन सबके दिलों पर राज करती रहीं और करती रहेंगी।

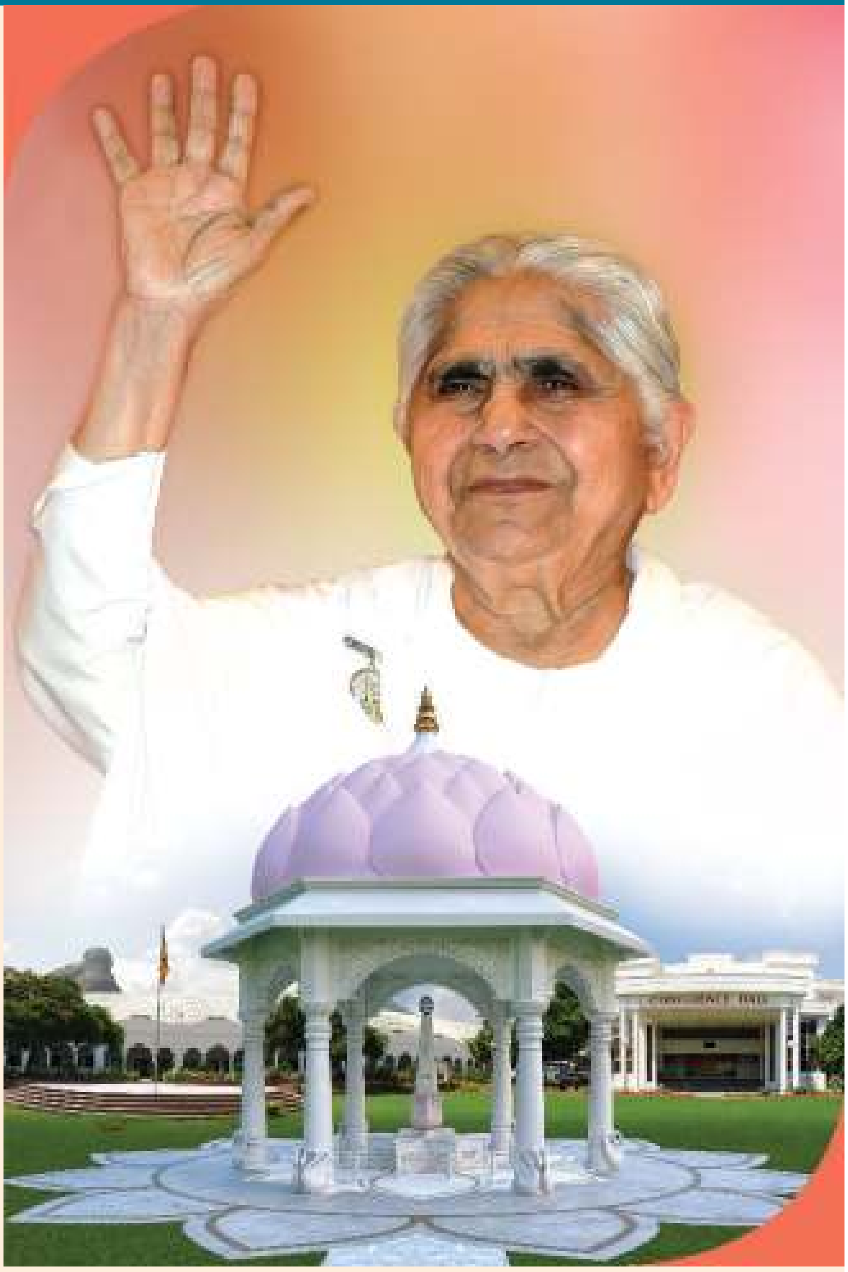

सूक्ष्म सेवा करने... किया रूप परिवर्तन

मार्च 2020 में 104 वर्ष की उम्र में दादी अपने तन का त्याग कर, सूक्ष्म शरीर धारण कर उड़ चलीं उन सूक्ष्म सेवाओं को करने जो शायद वो तन में रहते भी न कर पातीं। इसीलिए हम कहते कि दादी कहीं गईं नहीं, बस... ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाने लिए रूप परिवर्तित कर लिया। आज एक वर्ष पश्चात् भी दादी और उनकी शिक्षायें हमारे दिलों-दिमाग में हैं और श्रेष्ठ प्रेरणाएं देकर आगे बढ़ा रही हैं। तो ऐसी विशाल ह्दयी, आध्यात्मिक रूहानी ज्ञान की धनी, ईश्वरीय प्रेम और निश्चय की अटूट मिसाल, इस जहान की दादी 'दादी जानकी' को प्रथम पुण्य तिथि पर दिल से व जान से शत् शत् नमन।

परमात्म-प्रेम और पालना की कड़ी 'दादी जानकी'

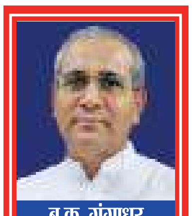
ब्र.कु. गंगाधर

कहते हैं... जिसका साथी है भगवान, उसका क्या बिगाड़ेगा आंधी और तूफान। इसे बार-बार पढ़ें, उसे अपने भीतर से सुनें, तो समझ जायेंगे कि परमात्म-प्यार क्या होता है और परमात्म-पालना क्या होती है! एक है परमात्मा को जानना, दूसरा है परमात्मा को पहचानना और तीसरा है परमात्म-निर्देशन पर चलना। आत्म-अभिमानी की बात तो हमने कई बार सुनी पर परमात्म-अभिमानी होकर इस जगत में विचरण करना, ये हमने न कहीं देखा, न सुना और न ही पढ़ा। पर हाँ, ऐसा भी कहीं हुआ है, तो ये बात उस पर सटीक बैठती है जिन्होंने ऐसा जीवन जिया, वो हैं 'जनक' दादी जानकी।

जिन्होंने परमात्मा को अपना बनाया और उसके लिए प्लैटफॉर्म अपनी बुद्धि को बनाया। आत्म-भान से भी ऊपर उठकर जिन्होंने परमात्मा को ही अपना अभिमान बना लिया, वो हैं परमात्म-अभिमानी। जहाँ अपना कुछ भी नहीं, न समय, न सुविधाएं। बस परमात्मा की श्रीमत ही उनका श्वास, उनकी धड़कन और उसी के फरमान को कर-गुज़रने में ही खुश रहना उनका जीवन। इसी को ही परमात्म-अभिमानी कहते हैं। हमने देखा, दादी की लौकिक पढ़ाई भले ही कम थी पर परमात्म-ज्ञान के इतने अनुभवों की अथॉरिटी से आज के बड़े-बड़े विद्वान भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते।

दादी समय की इतनी पाबंद थीं कि जिस समय और जितना समय, जिस कार्य के लिए मुकर्रर किया, वो उसे उसी के अनुरूप ही पूर्ण करतीं। दादी ने अपना जीवन परमात्म-श्रीमत के साँचे में ढ़ालकर अपने जीवन को सबके लिए एक आदर्श बनाया। उनसे जो भी मिलता वो भी ये अनुभव करता और उनके जीवन दर्पण में अपना मुखड़ा देखकर अपने आप ही ठीक करने की प्रेरणा लेता और उसे अपने हर प्रश्न का उत्तर समाधान के रूप में मिल जाता।

दादी ने अपने हृदय को इतना विशुद्ध बनाया जो स्वयं परमात्मा को भी भाया। वे भी उनके हृदय में जैसे कि उनके साथ ही हैं, ऐसा एहसास दादी को तो था ही, लेकिन दूसरों को भी ऐसे वायब्रेशन फील होते। यज्ञ के एक-एक पाई का सदुपयोग व सफल करना सीखना हो तो दादी जानकी से सीखने को मिलता है।

दादी ज्ञान की वीणा ऐसी बजातीं जो सुनने वाले उसी के भाव में भावविभोर हो जाते। दादी का ज्ञान का स्पष्टीकरण विवेकसंगत और अकाट्य था। सहज, सरल और स्नेह, ये तीनों ही उनके जीवन से निखरता प्रतीत होता। परमात्म-प्रेम की गंगा 'दादी' के सामने कोई किसी भी भाव से आया, पर वो लौटा तो परमात्म-प्यार के अनुभव के साथ। उनपर भी परमात्म-किरणें पड़े बिना न रहीं।

दादी की परख शक्ति ज़बरदस्त थी। एक बार वे जिसे भी देख लेतीं, उसे पहचान जातीं कि ये परमात्मा का वारिस बच्चा है। और उसे परमात्म-प्यार की पालना देकर अनुभूति करातीं। दादी जितनी ही सिम्पल थीं, उतने ही उनके विचारों से वो शिखर पर थीं।

दादी को हमने नज़दीक से देखा, अंतिम श्वास तक उनका परमात्म-पढ़ाई पर अटेन्शन बना रहा। वे हमारी उन्नति के लिए इशारा भी देतीं, किन्तु स्नेह की मिश्री के साथ। दादी से मिली पालना, उनका निश्छल प्रेम हम आज भी भूल नहीं पाते।

जीवन के अंतिम पड़ाव में भी दादी का अपने भविष्य के प्रति नशा देखते ही बनता था। और जब भी कोई मिलता तो ये बात उनके मुख मंडल से निकलती... 'मैं कौन मेरा कौन, मुझे क्या करना है', ये शब्द उनके मुख से सुनने के लिए सब लालायित रहते। होते भी क्यों नहीं, क्योंकि उन्होंने जीवन जिया ही ऐसा। आज हमें सबकुछ करते हुए भी ट्रस्टीपन के भाव में रहना मुश्किल नहीं लगता, क्योंकि हमारे सामने जीता-जागता उदाहरण दादी जानकी हैं। न वे किसी से प्रभावित हुईं, न किसी को प्रभावित किया। न व्यक्ति, न वस्तु, न पदार्थ और न ही किन्हीं संसाधनों से मोहित हुईं। ऐसी स्नेहमयी, पवित्रता की मूरत, परमात्म-प्यार का अनुभव कराने वाली दादी जानकी को उनके प्रथम स्मृति दिवस पर हृदय से स्मरणांजलि।

सदा ही याद रखें ये तीन बातें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जीवन में तीन बातें हमेशा याद रखना, और उन्हें पक्का करना। एक, जब किसी से मिलो न, तो मुस्कुराकर मिलो। मुस्कुराना तो आता है ना! आता है? कोई को नहीं आता, तो सीखा दें? मुस्कुराने का स्टॉक तो है ना! तो आप किसी से भी मिलो, मानो क्रोधी आपके सामने आ गया तो कई भाई-बहनें हमको कहते हैं कि बहन जी क्या करूं वो क्रोधी आया ना, मैंने और कुछ नहीं किया, आधा घण्टा उसने भाषण किया खराब। मैंने तो सिर्फ एक शब्द ही बोला। तो हम उससे पूछते हैं, क्रोध आग है, ये तो आप सब जानते हो ना। जिस समय क्रोध आता है तो लाल-लाल फेस हो जाता है। गर्मी लगती है तो कहते हैं ठण्डा पानी पीलाओ, ठण्डा पानी पीलाओ। क्रोध आग है ना। तो क्रोध आग, उसमें आपने एक शब्द बोला, कौन-सी बूंद डाली आग में? पानी की या तेल की? तो तेल की डाली ना! आग में तेल की एक बूंद भी डाली तो आग बूझेगी या भड़केगी? भड़केगी ना! इसीलिए आपके सामने क्रोधी भी आवे तो आप अपना मुस्कुराना न भूलें। मुस्कुरा तो सकते हैं ना! हमने ट्रायल किया है। हम एयरपोर्ट पर जाते हैं ना, तो हमको तो पिता श्री ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा ने सिखलाया ये है कि आप मुस्कुराते रहो, खुश रहो। इसीलिए हम एयरपोर्ट पर जाते हैं तो मुस्कुराते हैं। तो हमने देखा कि वो पहचानता भी नहीं है, लेकिन एक सेकण्ड के लिए मुस्कुराता तो देता है। ये भी तो सुख दिया ना हमने, तो आप हमेशा मुस्कुराते रहो।

दूसरी बात, कोई से भी मिलते हो तो उसे पानी या शरबत पिलायेंगे ना! ऐसे थोड़े ही बिना कुछ पिलाये छोड़ देंगे! तो आपके पास पता है एक बहुत बना बनाया एवररेडी शरबत है। मंगाना नहीं पड़ेगा, कोई दोस्त नहीं है जो ले आवे। पैसा नहीं है, ये बहाना भी नहीं चलेगा। एवररेडी शरबत है। वो शरबत है 'मीठा बोल'। है सभी के पास? वो शरबत एवररेडी है ना! तो उसको मीठे बोल का शरबत पिलाओ।

तीसरी चीज़, कोई भी आता है उसको कुछ खिलाया भी जाता है, खातिरी भी की जाती है। तो आपके पास एक बनी बनाई मिठाई है। ज़्यादा तो मिठाई से ही स्वागत करते हैं ना! तो आपके पास एक बनी बनायी मिठाई है। वो कौन सी है, दिलखुश मिठाई। है दिलखुश मिठाई आपके पास? अगर आप दिलखुश होकर उससे मिलेंगे तो वो भी दिलखुश मिठाई खायेगा। तो ये तीन चीज़ें अगर आप करो तो आपका घर भी मंदिर हो जायेगा। और घर-घर मंदिर बनने से हमारा भारत भी मंदिर बन जायेगा। जो बापू जी की इच्छा थी कि राम राज्य हो, सुख हो, शांति हो, तो जो बापू का काम अधूरा रहा वो कौन करेगा? बच्चे ही बाप का काम करते हैं ना! और बापू का भी जो 'बापू' है ना, परमात्मा राम, उसकी भी यही इच्छा है कि हमारा ये भारत जो है वो स्वर्ग बन जाये, सुखमय बन जाये, शांतिमय बन जाये। तो कौन बनायेगा, आप बनायेंगे? तो इसके लिए इन तीन चीज़ों को सदा अपने साथ रखो और उन्हें यूज़ करो, हर कार्य में, हर परिस्थिति में, हर समय उनका उपयोग करो।

जयजयकार तब होगी जब पुरानी बातें समाप्त हों

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जैसे सारे विश्व में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय अनकॉमन है क्योंकि इसको चलाने वाला चान्सलर ही अनकॉमन है। वह अलौकिक और पारलौकिक है। ऐसे अलौकिक, पारलौकिक बापदादा के हम सब स्टूडेंट्स भी अलौकिक हैं इसलिए हमारी जीवन भी अद्भुत, निराली, वन्डरफुल और प्यारी है। दुनिया में सन्यासी अनेक, योगी अनेक, विद्वान अनेक, धार्मिक नेतायें अनेक, भौतिक बातों की रिसर्च करने वाले अनेक, परन्तु विश्व का नवनिर्माण करने वाली संस्था केवल एक है। अपनी जीवन का निर्माण करने वाले हम एक हैं। आप सब यहाँ आये हो नव निर्माण करने। आपका जिस दिन ज्ञान में नया जन्म हुआ - उसको कहते हैं न्यू बर्थ डे। जब से हम शिवबाबा के इस विद्यालय में दाखिल हुए वह तारीख ही हमारे अलौकिक बर्थ डे की तारीख है। उस घड़ी से हमारा सम्बन्ध अलौकिक बन गया। वृत्ति-वायब्रेशन भी अलौकिक हो गये।

ऐसी कोई यूनिवर्सिटी नहीं जहाँ हर एक को ईश्वरीय मर्यादा के कंगन में बांधा जाए। यहाँ हमें वह कंगन बांधा गया। बापदादा का हमें यह-यह आदेश है, यह-यह नियम है। उस समय से ही हम सबने यह दृढ़ संकल्प लिया कि हमें अनेक आत्माओं का और स्वयं के जीवन का नव निर्माण करना है।

मैं जानना चाहती हूँ कि किसी की नैया बीच भंवर में रूक तो नहीं जाती? मेरी नैया की डोर खिवैया के हाथ में पक्की है? हम सब मुसाफिर हैं, नांव में बैठे हैं। हमें मजधार से पार करने वाला खिवैया है। डोरी उनके हाथ में है। वह कहता है नैया चलेगी, आंधी तूफान आयेंगे लेकिन घबराना नहीं। आंधी तूफानों से पार होने वाले का नाम है महावीर। अपना पांव नैया से मरने तक भी उतारना नहीं है। बाबा कहता ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी माना संगम पर जीवनमुक्त अर्थात् संस्कारों से मुक्त। जो अब संस्कारों से मुक्त हैं वही मुक्ति-जीवनमुक्ति पा सकते हैं। तो पहले चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय मुक्त रहता हूँ? अपने संस्कारों से मेरी स्थिति मुक्त रहती है? या मैं वर्सा तो जीवनमुक्ति का ले रहा हूँ परन्तु अभी मैं संस्कारों के बन्धन में बंधा हुआ हूँ? अगर मैं संस्कारों के बन्धन में हूँ तो स्वतन्त्र नहीं परतन्त्र हूँ। यही चार्ट चेक करो - मैं लौकिक से निकल अलौकिक जीवन, अलौकिक दुनिया निर्माण करने वाला, अलौकिक संस्कार वाला ब्रह्माकुमार हूँ या शुद्र कुमार हूँ?

मुझे सदा यही फुरना (फिकर) रहता - कि मुझसे ऐसा कोई व्यवहार व बोल चाल न हो जाए जो धर्मराज के आगे झुकना पड़े। यही मुझे डर है। बाकी मैं किससे डरती नहीं, दुश्मन मेरा रावण है। बाकी सब मित्र हैं। रावण को भी प्यार से कहती - ओ रावण अब तेरा राज्य पूरा हुआ। अब तू विदाई ले। उसे भी हम डांटकर नहीं भगाते। जब हम शीतल बन जाते तो वह आपेही चला जाता है। बाबा ने हम सबको नाम दिया है - तुम हो विश्व के नव निर्माता। हम सब हैं अपनी जीवन का व विश्व का नव निर्माण करने वाले। हम विश्व के निर्माता हैं। निर्माता माना माँ बनकर, मातृ स्नेही बनकर निर्माण करना इसलिए अपना चार्ट चेक करो। अष्ट शक्तियों को रोज़ देखो और अपनी शैतानियों को समाप्त करने का संकल्प करो। जब सब पुरानी आदतें समाप्त हों तब जयजयकार होगी।

मर्यादाओं पर चलकर बनाएं पुरुषार्थ को क्वालिटी वाला

राजयोगिनी दादी जानकी जी

ईश्वर के बच्चे हैं, यह ईश्वरीय बचपन है यह कब भूलता नहीं है, उसके बच्चे हैं तो बहुत फायदा है। तो निश्चय के बल से हँसते-गाते सारा जीवन बिताया है। जो कुछ हुआ आगे नहीं होगा, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगा दो। जो बात पूरी हुई ऑटोमेटिक आगे बढ़ो, फुलस्टॉप है तो एक छोटी-सी बिन्दी तो जो पुरुषार्थ में सब बातें याद हों, एक का दस गुणा फिर सौ गुणा, फिर हज़ार गुणा, सिर्फ बिन्दी लगानी है और आगे बढ़ना है। कोई भी लैंगवेज में ऐसे ही होगा ना ताकि कदम पर कदम रखने से, सी फादर, फॉलो फादर करने से पदमापदम भाग्यशाली बनेंगे।

कोई ने पूछा बाप समान कैसे बनें? यह लक्ष्य रखना सहज नहीं है। जिस बाप को याद करने से बल मिलता है, विकर्म विनाश होते हैं, पर बाप समान बनने का शब्द ऐसे है, भले विचार करो। बाप ऊंचे ते ऊंचा है, वो सबको बड़े प्यार से देखता है। ईश्वरीय आकर्षण से शान्ति, प्रेम, खुशी, शक्ति अन्दर में काम करती है, तो जीवन में सुख की अनुभूति ऐसी होती है जो कभी दुःख न हो।

मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हैं यानी यह चाहिए, यह चाहिए से फ्री हो गई हैं, कर्मेन्द्रियों से कर्म वो करते हैं जो बाबा कराता है। श्रीमत प्रमाण चलने से इज़ी है बाप समान बनना। दिन-प्रतिदिन जो बाबा से अनुभव हो रहा है, वह अनुभव दूसरे को भी हो तो बाबा कहे मेरा बच्चा मेरे समान है। बाबा अन्दर से सन्यास कराता है, अन्दर में कोई विकार न रहे। भगवान की यूनिवर्सिटी में अच्छा पढ़ने वालों को सीट मिलती है। तो एक-दो को यह भाग्य और भगवान की पहचान देना ही सेवा है। जैसे बाबा देखते-देखते देह के बन्धनों से, दुनिया से मुक्त कराता है, यह ईश्वर की कृपा है, यह विश्वास है, दृढ़ संकल्प है तो बाप समान बन जायेंगे, बाबा छोड़ेगा नहीं। जो आपने वायदा किया है, उन वायदों को निभाना है। प्रैक्टिकली बाप समान बनने के पहले हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी...इस बात की वैल्यू है।

किसी को पुरुषार्थ का सुख, किसी को बाप की कृपा का सुख, वह दुःखहर्ता-सुखकर्ता बना देता है। जो संग में आये वह सुखी हो जाएं। अपने आपको देखो, अपने को चेक करो। ऐसा अनेक आत्माओं को अनुभव करायेंगे ना, तो बाबा कहेगा यह बच्चा तो मेरे समान है। हम नहीं कहेंगे बाप समान हूँ, बाबा कहेगा। ड्रामा है माँ, वो है बाप, हम हैं एक्टर्स, फिर वन्डर, लगाओ जीरो बनो हीरो। एक हीरो एक्टर होता है, दूसरा हीरे मिसल लाइट, बेदागी हीरा। बाबा समान बनना है तो और कोई संकल्प न आये। सिर्फ बाबा को देखते रहो ना, तो भी शरीर भूल जाता है। कोई संकल्प नहीं होता है। बाबा की जो मुरली सुनते हो उसी में खो जाना चाहिए। वन्डर है बाबा का और हर एक की सेवा का विशेष पार्ट है इसलिए किसी के लिए ऐसे शब्द कभी नहीं बोलो कि यह तो सुधरेगा नहीं, ऐसे शब्द मुख से बोलना माना बड़ी भूल करना, हमको शुभ भावना रखने में कोई खर्च नहीं है, वह काम करती है, इसमें बाबा याद आता है। मम्मा ने अपने संकल्पों की क्वालिटी बाबा समान बनाई इसलिए मम्मा प्रैक्टिकल बाप समान बनी।

कितनी भी कोई अच्छी आत्मा हो, कभी भी ईर्ष्या न आवे क्योंकि इसमें बड़ा खतरा है। कई बहनें इसके कारण घर चली गयी क्योंकि ईर्ष्या वश मम्मा को देख नहीं सकती थी। ज्ञान अमृत है, ज्ञानामृत पियेंगे, पिलायेंगे। मुझे जो भगवान बना रहा है बस मुझे वो बनना है, क्वालिटी हो पुरुषार्थ की।

दादी जानकी जी का अभिवादन करते हुए महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी।

ग्लोबल समिट कम एक्सपो-2019 में दादी जानकी जी के साथ उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू जी।

दादी जानकी जी से रूहानी वरदानी दृष्टि लेते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी।

दादी के वृहद मानवता की सेवाओं के मुख्य पड़ाव

आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण दादी जानकी जी द्वारा 1974 में लंदन में सेवाकेन्द्र की स्थापना से विदेश में ईश्वरीय सेवाओं का आरंभ हुआ। उनकी प्रेरणा एवं उनके निर्देशन में आज 137 देशों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्र स्थापित किया गया। आध्यात्मिकता से सम्बंधित कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम तथा कॉन्फ्रेंसेज़, डायलॉग के ज़रिये विभिन्न सामाजिक समुदायों में आध्यात्मिकता की लहर फैलाई तथा परमात्मा द्वारा परिवर्तन के कार्य को सारे विश्व के सामने रखा। उन्हें इन कार्यों के लिए कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मेडल्स से सम्मानित भी किया गया। उनके मुख्य पड़ाव और उनकी उपलब्धियों को शब्दों में बांधना कठिन है पर हम संक्षिप्त में यहाँ रख रहे हैं।

प्रकाशित पुस्तकें

- विंग्स ऑफ सोल, 1999 में हीथ कम्युनिकेशन्स के द्वारा
- पर्ल्स ऑफ विजडम, 1999 में हेल्थ कम्युनिकेशन्स के द्वारा
- कम्पैनियन्स ऑफ गॉड, 1999 में ब्र.कु. आई एस द्वारा
- इनसाइड आउट, 2003 में ब्र.कु. आई एस द्वारा
- दादी जानकी द्वारा आम जन के लिए दी गयी सेवाएं

2007

- सेंटर ऑफ एक्सेलेंस फॉर वुमेन्स हेल्थ, कैलिफोर्निया, सैन फ्रांसिस्को में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रवचन
- सैक्रामेंटो के स्पिरिचुअल लाइफ सेंटर के वरिष्ठ मंत्री माईकेल मोरन के साथ सिक्रेट्स ऑफ ट्रांसफॉर्मेशन पर चर्चा

2006

- जस्ट ए मिनट के प्रारम्भ के अवसर पर रोबिन गिब्स द्वारा कविता "मदर ऑफ लव" दादी जानकी को समर्पित की।

2005

- लंदन में आयोजित एक त्रिदिवसीय सम्मेलन- 'बी द चेंज' के दूसरे दिन 'मनुष्य एवं उनका ग्रह' नामक विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रकट किए।
- कैंब्रिज अमेरिका में दादी जी को 'करेज ऑफ कॉन्शन्स्' अवार्ड प्रदान किया गया।
- जून 2005 में मियामी में सम्पन्न what the bleep do we know? नामक कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन प्रस्तुत किया।
- जून 2005 में दादी जी को Kashi Humanitarian Award प्रदान किया गया।
- दिल्ली में सम्पन्न द्वितीय International Conference of Global Mothers, मास्को की एक संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

2003

- यरुशलम में सम्पन्न World Congress of Religious Leaders के सम्मेलन में दिसम्बर में दादी ने भाग लिया।
- जून 12-14 के बीच ओस्लो में Global Peace Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादी जी ने मुख्य वक्ता के तौर पर अपने विचार रखे।
- लंदन के ओलंपिया कांफ्रेंस सेंटर द्वारा आयोजित Mind Body and Soul Exhibition में Quiet Room का उद्घाटन योगशक्ति राजयोगिनी दादी जानकी ने किया।
- शेलडोनियन थियेटर ऑक्सफोर्ड में "Through the Brain Barrier" नामक विषय पर दादी जानकी, प्रो. कोलिन ब्लैकमोर एवं डॉ. पीटर फेनविक के बीच डायलॉग चला।

2002

- बर्मिंघम में आयोजित "Respect, Its All About Time" नामक कार्यक्रम में दादी जी प्रिंस ऑफ वेल्स सहित अनेक आध्यात्मिक नेताओं के साथ शामिल हुईं।
- मैड्रिड में द्वितीय "UN World Summit On Sustainable Development" के लिए एक प्रतिनिधि मंडल का दादी ने नेतृत्व किया।
- दादी जी ने जेनेवा में आयोजित "The Globle Peace Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders" नामक सम्मेलन में भाग लिया।

2000

- Wings of Soul नामक दादी जी की दूसरी पुस्तक का विमोचन संपन्न हुआ।
- Pearls of Wisdom नामक दादी जी की तीसरी पुस्तक का भी विमोचन हुआ।

1999

- जेनेवा में आयोजित "UN World Summit on Social Development" के लिए दादी जी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- स्वीट्ज़रलैंड में आयोजित कार्यक्रम The Human Aspects of Social Integtration में दादी जी ने अपनी प्रस्तुति दी।
- न्यूयार्क के यू.एन.जनरल एसेम्बली हॉल में Millenium world Peace Summit of Religious & Spiritual Leaders नामक एक कार्यक्रम में दादी जी ने ब्रह्माकुमारीज़ प्रतिनिधि मंडल को अपना नेतृत्व दिया और अपना वक्तव्य भी प्रस्तुत किया।
- State of The World Forum न्यूयार्क में अपनी प्रस्तुति दी।

1997

- ग्लोबल अस्पताल एवं शोध संस्थान, आबू पर्वत के कार्यों के सफल संचालन के लिए दादी जी ने जानकी फाउंडेशन फॉर ग्लोबल हेल्थ केयर नामक संस्थान को अपना नाम प्रदान किया। इससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं हेल्थ केयर के क्षेत्र में आध्यात्मिकता के योगदान के प्रति लोगों के नज़रिये में बदलाव आया।

1996

- इस्तांबुल,टर्की में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सेटलमेंट-2 नामक सम्मेलन में दादी जी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- उक्त सम्मेलन में विश्व की विभिन्न सरकारों को दादी जी ने मानवोन्मुख विकास, मनुष्यों की भूमिका एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संदर्भ में उनके कार्यकलाप क्या हों, इसकी जानकारी दी।
- दुनिया के 60 से भी अधिक देशों के बच्चों को सिखलाई जा रही लिविंग वैल्यूज इन एजुकेशनल इनिशियेटीव का शुभारम्भ किया। यूनीसेफ सम्बन्ध शिक्षाविदों के साथ मिलकर दादी जी ने इसका प्रारंभ किया - State of The World Forum; San Francisco में एक वक्ता के रूप में भाग लिया।
- सिंगापुर में 5000 लोगों की उपस्थिति में अपनी पुस्तक 'कम्पेनियन ऑफ गॉड' का चायनीज भाषा में विमोचन किये जाने के अवसर पर दादी जी उपस्थित थीं।
- यूनीसेफ की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर यंग वुमेन ऑफ विजडम नामक कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

1995

- बीजिंग, चाइना में आयोजित UN 4th World Conference on women के लिए दादी जी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- राजनीति, विज्ञान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में मूल्यों के विकास का लक्ष्य रखते हुए Sharing Our Values For A Better World नामक एक वैश्विक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसका प्रारम्भ दादी जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

1993

- Inter-Religious Understanding And Co-operation नामक यू.के. में आयोजित एक कार्यक्रम की मेजवानी दादी जी ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न मतों के 600 से भी अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।
- दादी जी 'वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फेथ' की उपसभापति चुनी गयीं।
- ऑक्सफोर्ड के नज़दीक ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर की स्थापना के निमित्त बनीं।

दादी जानकी जी से मिलते हुए लोक सभा स्पीकर माननीय ओम बिरला जी।

दादी जानकी जी व दादी हृदयमोहिनी जी से मिलते हुए तत्कालिन महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी।

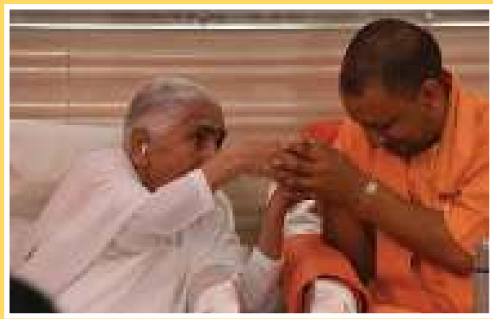

दादी जानकी जी का अभिवादन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी।

पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू,आन्ध्र प्रदेश को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जानकी जी।

वरिष्ठ समाजसेवी अन्ना हज़ारे जी से ज्ञान चर्चा करते हुए दादी जानकी जी।

पवित्रता की पात्रता से बनी प्रभु प्रिय

कमाल थी... दादी की दृष्टि

ब्र.कु. हंसा दीदी,निजी सचिव दादी जानकी

हमने दादी को बहुत ही नज़दीक से देखा, जाना और अनुभव किया कि कैसे दादी ने भगवान को अपने जीवन में बसा लिया था। कैसे वो सिमरण करके औरों को स्मृति दिलाती थीं कि मैं कौन, मेरा कौन और मुझे क्या करना है। दादी से जो भी मिलने आते, वे हमेशा उनका बुद्धियोग बाबा से ही जुटातीं। पार्टी में आने वाले भाई-बहनें हमसे यही रिक्वेस्ट करते थे कि प्लीज़ बहन जी हमको दादी की एक मिनट दृष्टि दिला दो। क्योंकि वो एक मिनट की दृष्टि उन्हों के लिए लाइफ टाइम एक यादगार रह जाती। और दादी एक ही मिनट की दृष्टि में सभी को निहाल कर देतीं। दादी के जीवन में ये भी देखा कि उन्होंने कुछ भी कल के लिए नहीं छोड़ा। जो भी करना है अभी कर लो, कल किसने देखा। तो हम भी जो भी उनके सेवा साथी थे, तो हम भी सदा मिलेट्री की तरह रेडी रहते थे। दादी इशारा दे और हम तुरंत कर लेते थे, हम चल पड़ते थे। दादी कभी भी बाबा की सेवा में ना नहीं कहती थीं बल्कि वो चाहती थीं कि हम और भी उनसे सेवा करवायें। और भी लोगों से मिलवायें। तो ऐसे दादी आज सबके दिलों में अपनी छाप छोड़ कर गयीं। दादी खुद कहते थीं कि मैं जान की 'की' हूँ। और सचमुच वे सबके दिलों को छू गईं। आज हम सब उनको याद कर रहे हैं। तो हमें उनसे यही सीखने को मिलता कि जो दादी ने किया उसी कदम पर कदम रख हम सब आगे बढ़ें।

दादी सबका ध्यान रखते हुए उनका भाग्य बनातीं

ब्र.कु. जयंती दीदी, निदेशिका,यूरोप

जब मैं पुणे में 1968 में थी तो उस समय दादी की दृष्टि ने मेरे तीसरे नेत्र(आत्मा) का ऑपरेशन किया। और वो तीसरा नेत्र खुला, फिर तो सारा जीवन मैं बाबा के साथ ही चलती रही। सारे विश्व में जिन आत्माओं का ड्रामा अनुसार आरंभ का पार्ट था वो जल्दी नज़दीक आते गए। 40 वर्ष जो दादी विदेश में रहीं, उन वर्षों के अन्दर बाबा का कार्य 120 देशों में पहुंचा। मेरी लौकिक माँ(रजनी बहन) ज्ञान में थी परंतु मेरे लौकिक पिता(मुरली दादा) ज्ञान में नहीं थे, परन्तु दादी के साथ उनका बहुत स्नेह भरा सम्बन्ध था। बाबा ने दादी को इशारा दिया था कि ये अच्छी आत्मा है, तुम सदा इसका ध्यान रखना। तो दादी फोन भी करती रहतीं, तो कभी टोलियां, कभी-कभी भोजन भी भेजती थीं। तो इस तरह मेरे लौकिक पिता को बाबा के यज्ञ के नज़दीक आने का मौका बना, उनकी दिल पिघलती गई और वे भिन्न-भिन्न कार्यों में सहयोगी भी बने। और जब फर्स्ट डेलिगेशन आया तो दादी ने हमको पत्र लिखा था कि बाबा के पाँच बच्चे आ रहे हैं। अमेरिका जा रहे हैं कॉन्फ्रेंस में निमन्त्रण पर। तो क्या आप चाहते हो कि वो लंदन रुकें? पिता जी की दिल बहुत बड़ी थी, सामाजिक तौर से तो उन्होंने तुरंत कहा हाँ। तो पाँच आत्मायें हमारे घर पर आकर रहीं। विदेश में सेंटर कोई भी नहीं था। तो हमने ये देखा कि बाबा कभी किसी का रखते नहीं हैं, भविष्य में जो मिलेगा वो तो होगा ही, परन्तु इस जन्म में भगवान उसका रिटर्न तुरंत ही देते हैं। तो मुरली दादा ने जो पाँच आत्माओं को एक मास के लिए बड़े ही प्यार से अपने घर में लंदन में रखा। तो बाबा ने उसका रिटर्न ये दिया जब वो अकेले हो गये रजनी बहन के अव्यक्त होने के पश्चात्, तो बाबा ने उन्हें लगभग 16 वर्ष तक फाइव स्टार ट्रीटमेंट से पालना देकर रखा। दादी जी के संग-संग और लास्ट में भी वो दादी की दृष्टि लेकर ही उड़े बाबा के पास। तो दादी की पालना और बाबा की आज्ञा और उस आत्मा का भी भाग्य तो बाबा तुरंत ही अवश्य ही इस जन्म में हर प्रकार का रिटर्न देते हैं।

हर एक परमात्मा से वर्सा प्राप्त करे

ब्र.कु. मोहिनी दीदी, न्यू यॉर्क

दादी का हर संकल्प, हर बोल, उनका हर कर्म हमारे लिए एक उदाहरण था। हमें उनसे प्रेरणा तो मिलती ही थी, लेकिन हम सभी के अन्दर जिस भी गुण की आवश्यकता होती थी वो प्रगट हो जाता था। कभी उदास मन या कम उमंग-उत्साह के साथ दादी के सामने जाते, तो उस टाइम दादी को देख कर, दादी के साथ बैठकर, दादी जिस तरह से हमको टोली देती थीं, तो उमंग-उत्साह के पंख लग जाते थे। तो इस तरह से दादी से, उनके सामने जाने से गुणों की प्राप्ति होती थी, शक्तियों का अनुभव होता था। दादी जी मुख से बोलकर कम, किन्तु अपने गुणों से सबको शिक्षा देती थीं। दादी के अन्दर बहुत सी विशेषताएं थीं। उनका दिल दया से भरपूर था। वो सदा ही ये सोचती थीं कि मैं किस तरह से हरेक को प्राप्ति स्वरूप बनाऊं या कोई भी प्रकार की हमें आवश्यकता है तो दादी एक चैरिटेबल सोल, पुण्य आत्मा की तरह, हमेशा दाता और वरदाता बनकर हमें देती रहतीं थीं।

ईश्वरीय नशे में रहकर, किया नश्वर देह का त्याग

राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

स्वयं भगवान शिव ने इस धरा पर अवतरित होकर महान रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ की स्थापना की। और इसी स्थापना में जिन पवित्र और महान आत्माओं ने अपने जीवन को कुर्बान किया यानी अपने शरीर रूपी अश्व को स्वाहा कर दिया, उनमें से एक थीं दादी जानकी जी। जिन्हें स्वयं ब्रह्मा बाबा 'जनक' कहकर पुकारते थे। क्योंकि वो अधिकतर समय विदेही स्थिति में रहती थीं। योगयुक्त ज्ञान-चिंतन में मग्न, अपना स्वस्व स्वाहा करने वाली दादी जी ब्रह्माकुमारीज़ की चीफ रहीं अनेक वर्षों तक। और उससे पहले उन्होंने अनेक देशों में ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का परचम लहराया। वो ऐसी आत्मा थीं जो अंग्रेजी न जानते हुए भी अनेक देशों के लोगों को राजयोगी, पवित्र, सात्विक बनाने में सफल रहीं। अनेक ईश्वरीय वरदान उनके साथ थे। अनेक ईश्वरीय शक्तियां उन्होंने संग्रहित की थीं। वे एक श्रेष्ठ योगिनी थीं। मैंने उनको 52 वर्ष तक देखा। मैं देखता था, अपने चिंतन में रहने वाली, इधर-उधर न देखने वाली, डीप साइलेंस की अनुभूति में रहकर चारों ओर शांति के वायब्रेशन फैलाने वाली ये महान आत्मा हमारे बीच में थी। हम अति गौरवान्वित थे ये देखकर कि ये महान यज्ञ, ये ईश्वरीय ब्राह्मण परिवार, ऐसी महान आत्मा से सुशोभित है जो परम पवित्र हैं, जो पूजनीय हैं, जो अनेक गुणों से सम्पन्न हैं। तो ऐसी महान तपस्विनी इस संसार को छोड़कर सूक्ष्म वतन वासी बनीं, फरिश्ता बनीं, विश्व सेवा के लिए। वो इस धरा पर जैसे कि अवतार थीं, वरदान थीं। ये महान आत्मायें संसार की सुंदरता होती हैं। जब ये चलती थीं तो चारो ओर सैंकड़ों लोग खड़े हो जाते थे, उनकी एक नज़र पाने के लिए। उनको चलता देखकर लोग प्रेरणा लेते थे कि फरिश्तों की चाल ऐसी होती है। उन्होंने जीवन में सदा ही आदर्श प्रस्तुत किया। वे बहुत अच्छी क्लास ही नहीं कराती थी बल्कि जो कराती थीं वो प्रैक्टिकल उनके जीवन में था। अन्तिम एक वर्ष में जब उनकी शारीरिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी और जब वो क्लास में पहुंचती थीं तो बहुत ही पावरफुल रूप से कहती थीं कि हमें अभ्यास करना है 'मैं कौन मेरा कौन'। ये राजयोग की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है। और अन्त तक भी वे इसी स्थिति में रहीं। हमें पूर्ण विश्वास है कि उन्होंने स्मृति स्वरूप होकर स्व-इच्छा से इस ईश्वरीय नशे में रहकर, नश्वर देह का त्याग किया। आज भी वे सूक्ष्म रूप से हमारे मध्य हैं। ऐसी महान आत्मा को उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर शत् शत् नमन् हो।

पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजंस,मेलबॉर्न ऑस्ट्रेलिया-2009 में सर्व धर्म गुरुओं के साथ दादी जानकी जी।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

फरिश्ते के रूहानी रिश्ते इस जहां में

ब्र.कु. आशा दीदी, निदेशिका, ओ.आर.सी.

मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ। जो बाबा की अति लाडली आदरणीय दादी जानकी जिनको बाबा ने बनाया, विश्व के आगे रखा, ऐसी दादी की पालना उपलब्ध हुई। एक बार की बात है किसी आत्मा जिसके साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था और मेरा फेथ भी था। उसने एक बार झूठ बोला तो मेरा फेथ टूट गया। मुझे लगा कि इस आत्मा ने अगर आज झूठ बोला है तो हो सकता है कि पहले भी बोला हो! मैं लंदन में गई हुई थी तो दादी जी से मैंने ये सवाल किया कि दादी जी मेरा बिल्कुल दिल नहीं करता कि अब मैं उस आत्मा के साथ सेवा में रहूँ, लेकिन दादी जी ने कहा आशा तुमने ये फेथ उस आत्मा पर बनाने के लिए कितना वर्ष लिया? तो मैंने कहा दादी बहुत वर्ष। तो दादी बोली बहुत वर्षों के

शुभ भावना और शुभ कामना रखना सिखाया

फेथ को एक घटना से तुम तोड़ देती हो! मैंने कहा दादी फिर मेरा फेथ तो नहीं रहेगा। दादी ने कहा कि ये भी गलत है, क्योंकि तुम्हारे वायब्रेशन उसको जायेंगे। तुम शुभ भावना, शुभ कामना रखो, जिससे उसको शक्ति मिले और वो अपने उस ओरिज़नल स्वरूप में आ जाये। मैंने देखा सम्बन्धों को हम आसानी से तोड़ देते हैं। जिन सम्बन्धों को पाला होता है वो सम्बन्ध कठिनाई से बनते हैं। तोड़ना सहज है, लेकिन बनाना कठिन है। दादी की ये शिक्षा सदा ही याद रहती है। साथ ही साथ दादी जी का जो हॉस्पिटैलिटी का संस्कार था, केयरिंग नेचर थी दादी की। 1985 में दादी ने मुझे यूरोप टूर पर भेजा। जाते समय दादी जी ने जो आत्मा भण्डारे के निमित्त थीं उन्हें कहा कि इसको बहुत सारी टोलियां दे दो। ये मांगेगी नहीं और इसको वहाँ कुछ मिलेगा भी नहीं। तो बहन ने जो टोलियां दी थी वो मैं ओरों को भी खिलाती थी कि दादी जी ने भेजी है। लेकिन जब मैं जर्मनी पहुंची तो दादी जी को वहाँ आना था। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि दादी लंदन से भोजन लेकर आयीं कि इसको इतने दिन हो गए जो अच्छे से खाना नहीं खाया होगा। ऐसे दादी रूहानी और जिस्मानी दोनों रूप से हमें स्नेह और पालना देती रहीं। ऐसी दादी हमारी बुद्धि में और हमारे दिलों में जिंदा हैं। और दादीजी की वो बातें मन और बुद्धि में झंकृत होती रहती हैं।

ब्र.कु. निर्मला दीदी, निदेशिका, ऑस्ट्रेलिया

वे इकोनॉमी का अवतार थीं

दादी जानकी से हमारा 1974 से कंटीन्यू रिश्ता रहा ही। दादी इकॉनोमी का अवतार थीं। वो हमेशा कहती थीं कि मैं पर्स हाथ में नहीं उठाती। मेरे कपड़े सफेद हैं और जेब खाली है और उसने 5 पाउंड की कुर्सी जो लंदन में खरीदी थी, सालों तक रिपेयर करके वही चलाती रहीं। एकनामी एक बाप का नाम उनके शब्दों में आता रहा और दादी की 90 की उम्र तक तो मेमोरी शार्प थी, तो जिन विदेशियों को शुरू से जानती थीं और उनके संस्कारों को जानती थीं, तो उसी अनुसार राय देती थीं। परन्तु कई बार उनसे ही पूछती थीं कि तुम क्या चाहती हो, तुम क्या समझती हो कि क्या करना चाहिए। और फिर उसी अनुसार राय देती थीं। और दादी का जो समर्पण भाव है वो भी, उसका संग भी लंदन में, यूके में विदेशियों को लगा। कई यूरोपियन भाई-बहनों ने अपना सबकुछ ईश्वरीय सेवा में लगा दिया और दादी से सिर्फ एक कमरा लिया। और दादी का जो मुरली के लिए प्यार था क्योंकि शुरू में जो उन्होंने पूछा था कि बाबा मैं मुरलीधर कैसे बनूँ, तो बाबा ने कहा था कि 18 बार मुरली पढ़ना। तो दादी हमेशा यज्ञ में तो 18 बार मुरली पढ़ती थीं। और अंत तक सेवा भी करती रहीं, मुरली भी पढ़ती रहीं और अमृतवेला भी करती रहीं। दादी को सेवा का बहुत उमंग उत्साह था। सेवा के लिए कभी भी तैयार हो जाती थीं।

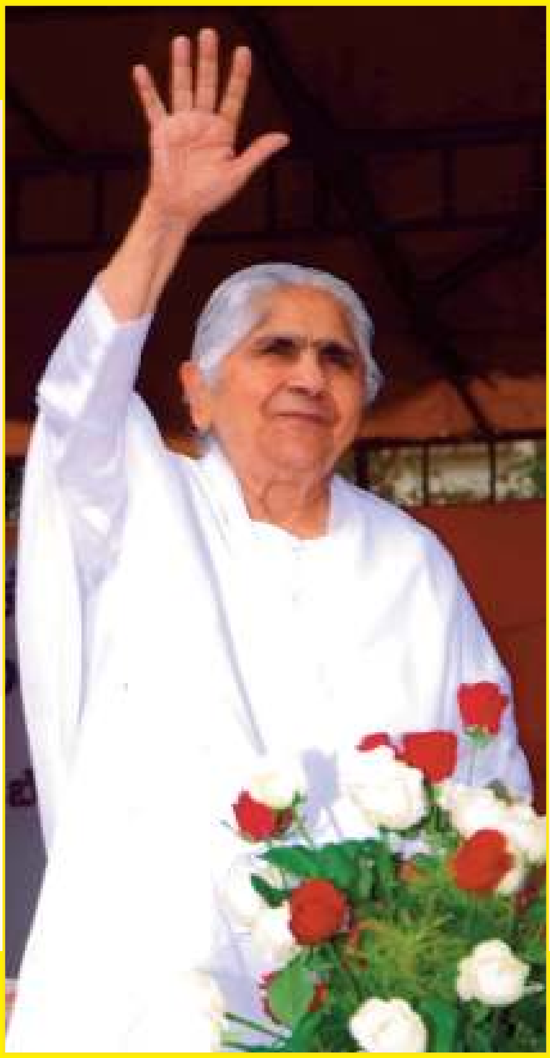

ब्र.कु. सुधा दीदी, निदेशिका,मॉस्को

दादी ने मुझे रशियन में ट्रान्सलेट करने को कहा

दादी जानकी जी की परख शक्ति, निर्णय शक्ति और दृढ़ता की शक्ति बहुत कमाल की थी। मुझे याद आता है सन् 1994 जब दादी तीसरी बार रशिया में आई थीं और वो क्लास का समय था। क्लास तीन भाषाओं में चल रही थी। हिन्दी, इंग्लिश और रशियन। मुझे रशियन नहीं आती थी, कुछ ही शब्द आते थे। और क्लास में किसी को हिन्दी नहीं आती थी। इसीलिए मैं दादी को इंग्लिश से हिन्दी में और रशियन बहन इंग्लिश से रशियन में ट्रांसलेट कर रही थी। लेकिन बीच-बीच में उस रशियन बहन को मैं कुछ-कुछ शब्द रशियन में बता देती थी। आप ऐसा ट्रांसलेट करो, आप ऐसा करो। दादी ने इस बात को नोट किया और कुछ देर के बाद ही दादी ने मुझे कहा कि आप खुद ही रशियन में ट्रांसलेट क्यों नहीं करती हो! मैंने दादी को कहा कि दादी मुझे रशियन नहीं आती, बहुत कहने के बाद भी दादी ने कहा कि नहीं आपको आती है, तभी आप उस बहन को बीच-बीच में रशियन के शब्द बताती रही हो। तो अब आपको ही रशियन में ट्रांसलेट करना है। दादी की इस दृढ़ता के आगे मैं कुछ नहीं कर सकती थी, तो दादी की बात को मानना ही पड़ा। फिर आगे पूरी क्लास को मैंने ही रशियन में ट्रांसलेट किया। कुछ शब्दों में, कुछ हाथों के इशारों से, कुछ चेहरे के एक्सप्रेशन से, कुछ आंखों के इशारों से यानी किसी न किसी तरह से किया। और केवल उस दिन ही नहीं, जब तक दादी मॉस्को में थीं दादी को रशियन में ही ट्रांसलेट करती थी। लेकिन सबसे खूबसूरत बात जो मैं आप सबको बताना चाहती हूँ वो ये है कि दादी का मुझसे रशियन में उस वक्त ट्रांसलेट कराना जैसे मेरे लिए एक वरदान बन गया। उसके बाद हर वर्ष जब भी कोई दादी रशिया में आती थीं तो मैं दादी को डायरेक्ट हिन्दी से रशियन में ट्रांसलेट कर पाती थी। जबकि मैंने रशियन कभी सीखी नहीं थी और अभी तक भी नहीं सीखी। इसको मैं एक बड़ा सौभाग्य समझती हूँ कि जब आप ऐसी महान विभूतियों के साथ, ऐसी अनुभवी आत्माओं के साथ बैठकर उनके शब्दों को समझें, उनके भावों को कैच कर पायें, उनके नैनों की भाषा को समझ पायें और उसको दूसरों तक पहुंचा पायें, इसमें कितनी बड़ी सेवा है। दादी जी इसके लिए तो बहुत ही पर्टिकूलर थीं। मैं हर बार ये नोट करती थी दादी जब भी आती थीं जैसे ज्ञान सरोवर में क्लास कराने आती थीं तो वो ज़रूर ट्रांसलेशन बूथ की ओर देखकर पूछती थीं कि कौन ट्रांसलेट कर रहा है? क्योंकि उनको इस बात का कन्सर्न रहता था कि व्यक्ति केवल शब्दों को ही न ट्रांसलेट करे बल्कि भावों को, उनकी गहराई को ट्रांसलेट करे और वो श्रोतागणों तक पहुंचा पाये। तो दादी ऐसा परख पाती थी, ऐसी उनकी निर्णय शक्ति थी जिससे वे हर आत्मा को बहुत आगे बढ़ा देती थीं।

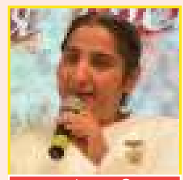

राजयोगा टीचर ब्र.कु. संतोष,रशिया

सौ वर्ष की उम्र में भी दादी का ब्रेन सम्पूर्ण स्वस्थ और सक्रिय

मुझे याद आता है कि रशिया में भी दादी जानकी जी कई बार आईं और छोटी सभा से लेकर 5000 तक की सभा में भी उन्होंने अपना वक्तव्य रखा और योग सिखाया। ऐसे ही एक बड़ी सभा में वहाँ के फेमस सेंट पीटर्सबर्ग के फेमस स्टेडियम में उनका प्रोग्राम रखा गया था तो ये सूचना सुनकर इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ मेडिकल यूनियन और बायोकेमिस्ट्री के जो प्रेजिडेंट थे उस समय, अभी भी हैं मिस्टर कोरोतकॉव और एट द सेम टाइम इंटरनेशनल प्रेजिडेंट रहे हैं। और यूनियन ऑफ किरिलोनिक्स टेक्नोलॉजिस। तो वे अपने इंस्ट्रूमेंट के साथ हॉल में पीछे आकर बैठ गये। देखना चाहते थे कि 90 वर्ष का ऐसा कौन-सा योगी रशिया में आया है, क्योंकि वो रिसर्च कर रहे थे 60 साल से ऊपर वाले लोगों की ब्रेन की स्टेबिलिटी या उसके ऊपर। इतने 5000 की सभा में भाषण करने के बाद उन्होंने सोचा कि इनके ब्रेन पर कुछ तो शांति की कमी होगी, ऐसा सोच कर वो आये। कहने लगे कि क्या मैं आपकी एनर्जी को मेजर कर सकता हूँ? तो दादी ने कहा क्यों नहीं भाई, मैं तो आपकी सेवा के लिए हूँ। तो वो जब दादी जी को वहाँ ले गये और उन्होंने अपने इंस्ट्रूमेंट्स दादी जी के ऊपर लगाये। पांच मिनट के अन्दर उसने जो अपना रिज़ल्ट देखा तो कहते हैं कि वो फर्स्ट पर्सन अपनी लाइफ में ऐसा देख रहा है जो इस उम्र में 100 के नज़दीक आ गया है कि लेकिन ब्रेन के ऊपर एक भी अनब्रोकन शाइनिंग लाइट, क्राउन लाइट का औरा ये इतना फेसिनेशन(आसक्ति) उनको हुआ। तो उन्होंने एप्रीसिएशन डिप्लोमा भी दिया। और इसके साथ-साथ अपनी संस्था की तरफ से दादी को ऑनर भी दिया। तो ऐसे सुन्दर-सुन्दर बातें याद करके हम हमेशा दादी जी को एग्ज़ाम्पल अपने सामने रखते हैं।

योगगुरू स्वामी रामदेव जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए दादी जानकी जी।

दादी जानकी जी का अभिवादन करते हुए श्री श्री रविशंकर जी।

प्लैटिनम जुबली-2011 के संत सम्मेलन में संतों के साथ दादी जानकी जी।

श्रेय नहीं लिया... श्रेष्ठ बन गईं

ब्र.कु. चक्रधारी दीदी,दिल्ली शक्ति भवन और रशिया में मॉस्को और पीटर्सबर्ग के जितने भी सेवाकेन्द्र हैं उनकी डायरेक्टर हैं। एक बार की बात है, इंग्लैंड में एक कुमार-कुमारी ज्ञान में चलते थे, लेकिन थोड़े समय के बाद दोनों ने आपस में शादी कर ली और एक बच्चे को भी जन्म दिया। फिर काफी समय के बाद वे पुनः दादी से मिलने आये, तब दादी ने कहा कि अपने बच्चे को क्यों नहीं लायी, मुझे पता चला कि आपका बेटा भी है। तो दोनों ही रोने लगे, दादी ने कहा कि क्या बात है रो क्यों रहे हो। तब उन्होंने कहा कि दादी- बच्चा जन्म से ही अंधा है। कर्म हमने बुरे किए लेकिन शायद हमारे बुरे कर्मों का फल हमारे बच्चे को भोगना पड़ा। दादी ने कहा ऐसा कभी नहीं हो सकता। हरेक अपने कर्मों का फल स्वयं ही भोगता है। लेकिन दूसरे ही दिन दादी के कहने पर वो बच्चे को लेकर दादी के पास आये। सतगुरुवार का दिन होने के कारण दादी सभी को अमृत पिला रही थीं। माँ बच्चे को दादी के सामने लाई, तो दादी ने उसके मुख में अमृत(जल) डाला। बच्चे को अवश्य जल स्वादिष्ट लगा। जल पीने के कुछ ही देर बाद वो पुनः माँ की गोदी से उठा और दादी की तरफ आया और दादी के गाल पर हाथ रख करके कहता है कि मुझे पुनः दो, तो दादी ने दोबारा उसके मुख में जल डाला। और पीकर फिर वो माँ के पास गया। तब दादी ने उसकी माँ से कहा कि तुम कहती हो कि ये अंधा है, अगर अंधा है तो इसे कैसे पता कि मैंने ही इसे जल पिलाया है। और मुझे ही गाल पर हाथ लगाकर इशारा करके पुनः जल मांगता है और जल पीने के पश्चात् तुम्हारे ही पास चला गया। तो मैं नहीं समझती कि ये अंधा है। एक बार डॉक्टर से पुनः इसका चेकअप कराओ। बच्चे की माँ ने कहा कि डॉक्टर ने हमें लिखत में जवाब दे दिया, क्योंकि तीन ऑपरेशन भी इसके हो चुके हैं। अब कैसे उसके पास लेकर जायें। दादी के आग्रह करने पर वह पुनः डॉक्टर के पास गये। डॉक्टर ने कहा कि जब सर्टिफिकेट दे दिया कि अंधा है तो फिर क्यों लाये? उन्होंने कहा कि हमारे बड़ों ने कहा है कि एक बार चेक कराओ। तब डॉक्टर ने देखा और कहा कि कल तक ये अंधा था, लेकिन आज ये अंधा नहीं है। उसके बाद बच्चा अपना जन्म दिन तब तक नहीं मनाता था जब तक दादी न आ जाये।

सब लोगों को पता था दादी के अमृत(जल) पिलाने के बाद ही उसकी आँखों की रोशनी आई। किन्तु दादी ने कभी ये स्वीकार नहीं किया कि मेरे जल पिलाने से इसकी आंखों की रोशनी आयी। इसके पूर्व कर्म की भोगना पूरी हुई और रोशनी आने का निमित्त कारण ये अमृत जल बना। दादी कभी अपनी महिमा स्वीकार न करते हुए सदा ही बाबा की महिमा करती रहीं।

जब ग्लोबल कोऑपरेशन हाउस बन रहा था तो दादी ने कहा कि मैं कभी उधार लेकर मकान नहीं बनाऊंगी। दादी हमेशा कहती थीं कि बाबा ने कर्ज को मर्ज कहा है। परन्तु आर्किटेक्ट से भी बात हो चुकी थी कि समय पर भवन बन जाने पर हमें उन्हें पैसा देना होगा और नहीं दे पाये तो दण्ड भरना पड़ेगा। और भवन बनने का जो समय निश्चित था अगर भवन उस समय में नहीं बना तो उन्हें दण्ड भरना पड़ेगा। भवन का बनना निश्चित हो चुका था। दादी ने क्लास में भी बताया कि इतना पैसा नहीं है हालांकि सारे विश्व के सेवाकेन्द्रों के योग से भी बन रहा था लेकिन दादी ने कहा कि आजकल इतना धन नहीं है इसमें जो भी अपना तन से, अपनी विशेषताओं का सहयोग दे सकते हैं तो अपना सहयोग देकर इस भवन को कम्पलीट करो। तो ऐसे में एक भाई ने जहाँ वो सर्विस करते थे वहाँ कारपेन्टरी का काम होता था तो उन्होंने वहाँ कहा कि ऐसे-ऐसे स्थान बन रहा है,धार्मिक स्थल बन रहा है, अगर वहाँ कोई सेवा करना चाहता है फ्री, तो अपनी सेवायें दे सकते हैं। तो एक युगल ने वहाँ जाकर सेवा करना स्वीकार किया। सेवाओं के दौरान उस युगल को एक दिन रास्ते में जाते वक्त अचानक सड़क के बीचों बीच एक मनुष्य गिरा हुआ मिला। उन्होंने जाकर देखा तो उसने शराब ज़्यादा पी हुई थी। वो खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। उन्होंने उस व्यक्ति को अपनी कार में डाला और होश आने पर उसके कपड़े बदलाकर, ठीक करके उसे उसके घर भेज दिया। कुछ समय के पश्चात जब उस व्यक्ति ने शरीर छोड़ दिया तो इस युगल को कोर्ट से बुलावा आया। उस व्यक्ति ने मरने से पूर्व ये लिखा था कि 40000 पौंड इस युगल को मेरी तरफ से दिए जायें। अब वो 40000 पौंड देने के लिए कोर्ट ने उन्हें बुलाया था। और 40000 पौंड लेकर वो दादी जी के पास आये, कहा दादी आज यज्ञ में भवन बन रहा है इसकी आवश्यकता है, इसलिए 15 हज़ार पौंड हम अपने पास रखेंगे। एक छोटा-सा कमरा हम लेंगे और 25 हज़ार पौंड बाबा की भंडारी में डालेंगे। दादी ने कहा कि कुछ और भी रख लो कोई हर्जा नहीं, तो बोले नहीं दादी 25 हज़ार पौंड भंडारे में डालेंगे। दूसरे दिन वो 15 हज़ार पौंड भी लेकर आ गये। उन्होंने कहा कि दादी जी हम तो टूटे हुए मकान में रह ही रहे थे और रह भी सकते हैं। आज जब इस भवन को बनाने के लिए आवश्यकता है तो ये भी आप रख लीजिए। दादी के मना करने के बाद भी उन्होंने बाबा के बॉक्स में डाल दिया। ठीक समय पर भवन बन गया, कार्य निपट गया और फिर वो चले गए। कुछ समय के बाद दादी ने ऑक्सफोर्ड में एक रिट्रीट सेंटर खरीदा। जिसमें 90 कमरे बने हुए थे और वो भी एक रानी का पैलेस था। उन्होंने कहा कि फाइनल पेमेंट करने पर आपको चाबियां हैंड ओवर कर दी जायेंगी। और पता चला कि दो बड़े-बड़े कट्टे, उसमें चाबियां थीं। किस दरवाजे की, किस अलमारी की, कौन-सी है। अब दादी ने कहा कि ये तो बहुत बड़ी प्रॉब्लम आ गई और कौन इन चाबियों को समेटेगा, सम्भालेगा और कौन पहचानेगा कि किस दरवाजे की कौन-सी चाबी है। फिर दादी को विचार आया कि वो युगल जो बढ़ई आता था, उनसे पूछना होगा वो फ्री थे, उनका कोई बच्चा भी नहीं था। तब उन्होंने उस युगल को बुलाया और कहा कि ऐसे-ऐसे हम एक भवन ले रहे हैं उसकी चाबियां सम्भालने वाला, कोई करने वाला नहीं है, क्या आप ये चाबियां सम्भालेंगे? तो उन्होंने कहा कि दादी जी हम वहाँ भी रहते हैं, तो हम यहाँ भी रह जायेंगे। दादी ने कहा कि परमानेंट इस पैलेस में रहने वाले आप होंगे। बाकी रिट्रीट करने वाले आयेंगे और चले जायेंगे। लेकिन चाबी लगाना, हर चीज़ को जानना ये आपके ऊपर रहेगा। उन्होंने स्वीकार किया।

आप सोचिए एक छोटे से मकान के लिए 40000 हज़ार पौंड उन्होंने बाबा के बॉक्स में डाले और बाबा ने उन्हों को इतना बड़ा पैलेस परमानेंट रहने के लिए दे दिया। दो रूम उनको मिल गए। भगवान किसी का रखता नहीं है, कहता है एक कदम तुम बढ़ो और पदम कदम मैं बढ़ूंगा। ये दादी जी ने करके दिखाया और हम सभी के सामने एग्ज़ाम्पल हैं। उस दादी ने बड़े प्यार से न केवल बाबा के बच्चों की पालना की किन्तु सम्पर्क और सम्बन्ध में आने वालों की भी पालना करते हुए सर्वस्व त्याग करने को तैयार हुए। ऐसी थी हमारी आदरणीय प्यारी दादी जी।

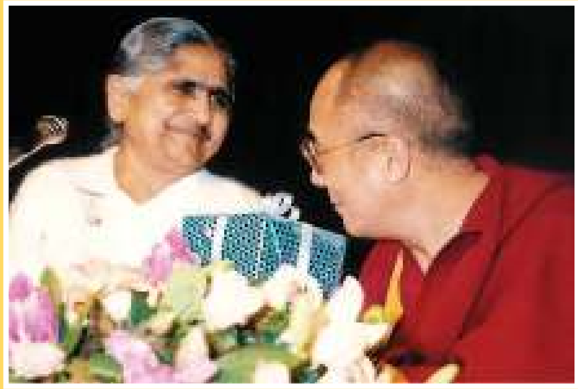

हिज़ होलीनेस दलाई लामा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी जानकी जी।

पूर्व प्रधानमंत्री माननीय राजीव गांधी जी के साथ हैं दादी प्रकाशमणि जी एवं दादी जानकी जी।

बैरोनेस वर्मा द्वारा 'भारत गौरव अवार्ड' से सम्मानित दादी जानकी जी की ओर से अवार्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. जयंती दीदी,यूरोपीय सेवाकेन्द्रों की निदेशिका।

दादी जानकी जी को 2008 में पुणे में 'सद्गुरु भूषण पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी अन्ना हज़ारे जी तथा अन्य।

सर्व के लिए बड़ा दिल रखो

ब्र.कु. वेदांती दीदी,निदेशिका अफ्रीका

दादी विश्व की माँ तो है ही है, लेकिन मेरे लिए एक विशेष माँ से बढ़कर एक विशेष पार्ट बजाया। दादी जब पहले मिली तो ऐसी दृष्टि मिली, अहमदाबाद से आबू ले आये, बाबा से मिलाया, नाम रंजन से वेदान्ती करा दिया। रंगीन कपड़ों से सफेद कपड़ा पहनवा दिया और मुझे याद है शुरू-शुरू में जैसे डर लगता है न तो दिल छोटा हो जाता था कोई-कोई बात में, तो दादी ने शुरू में ही कहा कि वेदांती छोटा दिल नहीं करो किसी बात में। तब से लेकर आज तक दादी ने खाली डायरेक्शन, करेक्शन या एडवाइज़ नहीं पर वो पावर दे दिया कि कुछ भी हो जाये लेकिन किसी भी बात में छोटा दिल नहीं करना है। तो दादी ने जैसे बड़ा दिल बना दिया। उसके आगे दादी जब फर्स्ट विदेश यात्रा पर जा रही थी तो मैं एयरपोर्ट तक बॉम्बे दादी को बाय-बाय करने गयी। तो मैंने दादी को कहा कि आप तो विदेश की सेवा करने जा रहे हो तो अब हमें भारत में क्या करना है। तो दादी ने कहा कि जो महारथी होता है वो दीवार को जम्प लगाकर तोड़कर आगे जाता है। दादी के वो शब्द कुछ समय में ही साकार हो गये। मेरा अफ्रीका और विदेश की सेवाओं का पार्ट शुरू हो गया। दादी बहुत नहीं बोलती थी, थोड़े ही शब्द बोलती थी। पर वो थोड़े शब्दों में सबकुछ कह देती थी। तो अभी लास्ट जब मैं मधुबन आई तो दादी ने कहा कि दादी से जितना बैठना है, मिलना है समय बिता लो, समय का भरोसा नहीं। तो मैंने हँस कर कहा कि दादी आप अफ्रीका आयेंगी, अभी 103 साल की दादी को मैं कह रही हूँ कि अफ्रीका आयेंगी। बोला हाँ-हाँ हंसा से बात कर लो। हंसा से बात की और दादी आयीं। 103 साल की उम्र में दादी नैरोबी आयीं। दादी का जो हर कार्य में पावरफुल थॉट था,वो कार्य कर रहा था और कर रहा है। ऐसी दादी के लिए हमें दिन-रात बापदादा की प्रत्यक्षता का कार्य करने के लिए, हमें दृढ़ संकल्प लेने का ऐसा सुन्दर मौका है और मैं ये कहूंगी कि दादी ने पालना दी तो साथ-साथ में जयंती बहन के साथ इतना सुन्दर रिलेशन करवाया और कहा कि ये दो बॉल मेरे हाथ में थे। वेदांती और जयंती। दोनों बॉल मैंने फेंके तो एक मेरे गोल-गोल घूम रहा है और एक दूर जाकर घूम रहा है। वो कहीं और सेवा पर, और मैं कहीं और सेवा पर। आज भी मेरे दिल से यही निकलता है कि दादी बोलिए मुझे क्या करना है, मैं हर एक बात करने के लिए तैयार हूँ।

सच्चाई, सफाई और सादगी की मिसाल दादी जानकी

त्यागी भी रॉयल भी

ब्र.कु.सुदेश दीदी, जर्मनी

हमें लग रहा है कि दादी हमें एक डायमण्ड 'की' देकर गयी हैं। उन्होंने न केवल अपना जीवन हीरे तुल्य बनाया बल्कि अनेकों का भी हीरे जैसा जीवन बनाने के निमित्त बनीं। 1974 में हम और दादी जी लंदन गये और एक छोटे फ्लैट में रहे। दादी का जीवन सिम्पल, सादगी और परमात्म प्रेम यानी वो प्रेरणा देने वाला रहा। उसमें हम आठ बहनें रहती थीं। रात को हम लोग ज़मीन पर सोते थे और दादी जी क्लास रूम में रखे एक लकड़ी के तख्ते पर सोती थीं, जिसे दिन में क्लास कराने के लिए संदली के रूप में इस्तेमाल करते थे। और दिन में बहुत कम रेस्ट करने का चांस रहता था। परन्तु दादी जी जैसे की आराम से परमात्मा की गोद में लेटी हैं। वो इतना सख्त बोर्ड है लकड़ी का, मैटर्स तो उस पर थी परन्तु एक जीवन में त्याग की धारणा, त्याग भी नहीं कहेंगे परन्तु भाग्य है कि भगवान की मुरली जहाँ चलती है उस स्थान पर विराजमान अथवा परमात्मा की याद में, प्रभु प्रेम की गोद में विश्राम करते हैं। धीरे-धीरे तो मकान बढ़ते चले गये और अभी तो ग्लोबल कोऑपरेशन हाऊस, डायमण्ड हाऊस, रिट्रीट सेंटर तो देखिए त्याग के बीज से कितना बड़ा भाग्य बनता है कि दादी जी की शुरू की सिम्पलीसिटी, त्याग की भावना से अच्छी प्रेरणा मिली। परन्तु उस त्याग में दादी जी के संस्कारों में रॉयल्टी बहुत थी।

स्वच्छता स्वाभाविक रीति से, कोई छोटा-सा तिनका भी इधर-उधर गिरा हुआ है तो दादी जी उसको उठाकर वहाँ से हटाती, कोई चीज़ इधर-उधर बिखरी हुई,नहीं। हृदय की भी स्वच्छता, रूम की भी स्वच्छता जहाँ बैठते हैं वहाँ भी स्वच्छता और जिनके साथ रह रहे हैं उनके साथ भी स्वच्छ मन, स्वच्छ भावना, श्रेष्ठ वृत्ति। वृत्ति, दृष्टि, व्यवहार में सत्यता थी। शुभ भावना और शुभ कामना की तो दादी अवतार थीं।

मैंने दादी को समय सफल करते देखा

ब्र.कु. शुक्ला दीदी,दिल्ली

दादी जी का जीवन एक खुली किताब के रूप में था। जिसका एक-एक पन्ना खोलकर देखें तो कुछ जानने के लिए, कुछ सीखने के लिए, कुछ समझने के लिए और कुछ धारण करने के लिए बहुत सारी बातें हमें मिलती थी। जो हमें श्रेष्ठ और महान जीवन बनाने के लिए बहुत उपयोगी होती थी। दादी जी अनुशासन प्रिय थीं। दादी जी कहा करती थी कि सवेरे से लेकर प्रातः 8 बजे तक मौन में ही रहकर और बाबा की याद में ही रहकर मनन-चिंतन करना है। इसके सिवाय और कोई बात नहीं करनी है। दादी जी हमेशा योग साधना के ऊपर बहुत ध्यान देती थीं। मैंने देखा वो बीच-बीच में एकांतप्रिय और अंतर्मुखी हो जाती थीं। कई बार मैंने देखा वो अपना कमरा बंद करके एक अच्छी योग साधना करती थीं। और निरीक्षण करती थीं कि मेरे में और बाबा में क्या अंतर है। दादी जी प्रभु की ऐसी गोपिका थीं, ईश्वरीय रंग में ऐसी रंगी हुई थीं जो उनको देखते ही लगता था कि अगर गोपिका देखनी हो तो एक दादी जानकी को देखो। एक बार 1997-98 के बीच में सेंटर पर गई तो दादी जी कुछ कन्याओं के साथ एम्ब्रायडरी(कढाई) कर रही थीं तो मैंने पूछा दादी जी आप ये क्या कर रही हैं? तो दादी जी ने बड़े प्यार से उत्तर दिया कि समय का सदुपयोग कर रही हूँ। हमारे पास काफी समय होता है, समय को इधर-उधर वेस्ट न करके अपनी मेहनत से कुछ कमा कर खा लेना सर्वोत्तम होता है। तो दादी जी का ऐसा श्रेष्ठ जीवन देखकर मुझमें भी ऐसा महान जीवन जीने की शक्ति आई और एक आशा की किरण पैदा हो गई।

विश्व कल्याण और परोपकार दादी के नस-नस में

ब्र.कु. कमला दीदी,निदेशिका ,म.प्र.,छ.ग.

दादी जी का व्यक्तित्व बहुत अनूठा, अनोखा, महान और विशाल था। दादी जी के अन्दर विश्व कल्याण की भावना, कितनी परोपकारिता तो हम सच बतायें दादी जी के जीवन का, उनकी धारणाओं का, उनकी सेवाओं का उनके व्यक्तित्व का मेरे मन पर तो बहुत प्रभाव पड़ा। और आज भी कोई बात होती है तो मैं यही सोचती हूँ कि यदि ऐसी परिस्थिति दादी के सामने आती तो दादी क्या करती! मुझे वैसे ही करना चाहिए। अगर बाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहो तो दादी की पालना से हम कर सकते हैं।

परिवार की भासना आती थी दादी से

ब्र.कु. राज दीदी, निदेशिका, काठमांडू,नेपाल

एक बार मधुबन से प्यारे बाबा ने हमें मुम्बई में प्रदर्शनी में भेजा। मुम्बई प्रदर्शनी के बाद बड़ी दीदी मनमोहिनी ने पूना भेजा। उन्होंने कहा कि राज इतना नज़दीक आई हो तो पूना में दादी जानकी जी से मिलकर आओ। हम दादी जी के पास गये। उनका आश्रम, योग का वातावरण, शांत वातावरण, ज्ञानयुक्त वातावरण ऐसा हमें फील हुआ। बहुत-बहुत निर्मान, महान, क्लास करना-कराना और भंडारे में जाना, खाना-पीना देखना, ऑलराउण्ड... दादी निर्मान और महान रहती थीं। उनके अन्दर निर्णय शक्ति और परख शक्ति भी बहुत थी, जो हमने सीखी और सीखते गए। दिनभर दादी सेवा में रहती थीं। और शाम को आना और फिर शाम को क्लास। दादी का भाषण हमेशा ऐसा होता था जैसे कि वो अपने परिवार से मिल रही हों। भगवान क्या है आपका पिता है। वो बहुत कुछ देने के लिए आया हुआ है और हमें उससे लेना है। ऐसे लगता था जैसे दादी बहुत-बहुत प्यार से भगवान का खज़ाना दे रही हैं, और लेने के लिए सीखा रही हैं।

दादी हमेशा ज्ञान की नई और गुह्य बातें सुनातीं

ब्र.कु. पुष्पा दीदी, दिल्ली पांडव भवन

एक बार मुझे बहुत बड़ा सौभाग्य मिला जब प्यारी दादी जी विदेश में 1974 में लंदन में गईं। और उसके तीन-चार वर्ष बाद भारत वापिस आये, और दिल्ली में पांडव भवन में रहे। सौभाग्य से दादी गुल्ज़ार ने मुझे एक-दो स्थानों पर उनके साथ टूर पर भेजा, तो एक बहुत समीपता, बहुत घनिष्ठता दादी से मैंने पायी और मैंने देखा कि प्यारी दादी जो बहुत त्यागी, तपस्वीमूर्त, सादगी की चलती-फिरती एक लाइट हाउस, माइट हाउस थी। कई बार हमने देखा, दादी सुनाया भी करती कि मुझे हमेशा बाबा और ड्रामा याद रहता है, मैं साक्षी होकर चलती हूँ। इसीलिए मैं निश्चिंत रहती हूँ। मुझे किसी व्यक्ति, किसी वस्तु, पदार्थ, वैभव कुछ नहीं चाहिए। मेरे एक कंधे पर बाबा है और एक कंधे पर ड्रामा है और जितना दादी बाबा को हर समय याद करते रहती, तो उतना ही दादी को हमने देखा ड्रामा भी याद रहता था। जब सन्1981 में दिल्ली में लाल किले पर बहुत बड़ा विश्व महायज्ञ नाम से कार्य चला जिसमें देश-विदेश के सभी भाई-बहन शामिल हुए। और सभी की तरफ से बहुत सुन्दर-सुन्दर, बड़े-बड़े स्टाल्स बनाये गए। तो सभी दादियां दिल्ली पांडव भवन में रहीं। दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी गुल्ज़ार तो थी हीं, दादी ईशू और दादी जानकी काफी समय से वहाँ थे। विदेशी भाई-बहन भी वहाँ पर थे, अपने-अपने स्टाल की तैयारी कर रहे थे। तो दादी बड़े प्यार से बात करतीं, एक-एक विदेशी को इतनी गहरी दृष्टि देतीं और साथ-साथ सभी दादियां बैठती थीं तो बहुत चिट-चैट चलती। दादी किसी को मिल रही होती थीं, दादियों के बीच में भी मैं देखती थी कि दादी जानकी कोई न कोई एक नई प्वाइंट सुनातीं। तो जैसे ज्ञान रत्नों का भंडार दादी रहीं। हमें दादी के बोल से हमेशा दृढ़ता अनुभव होती थी। और कोई भी बात बड़ी अथॉरिटी से कहतीं ताकि सामने वाला उसे जल्दी फॉलो कर ले। और जीवन में ला सके।

अंदर-बाहर की क्वालिटी पर था विशेष ध्यान

ब्र.कु. सुषमा दीदी,जयपुर

मुझे दादी जी के करीब रहकर सेवा करने का, सीखने का मौका मिला। मैंने देखा दादी सावधानी भी देती थीं और देती ऐसे ढंग से थीं कि समझने वाला समझ सके। एक बार कोई बात हुई तो दादी ने बस इतना ही कहा कि छींक लगती है तो खुशबू चारों ओर फैल जाती है अगर कोई भी कर्म हमारा ऊपर-नीचे हो जाता है, कोई गलती हो जाती है तभी तो बात फैलती है। अगर गलती ही न हो,तो बात कैसे फैलेगी! ये बात दादी जी ने छींक के बहाने मुझे समझा दी। ऐसे ही मैं एक बार जर्मनी में थी, तो दादी जी मेरे पास आईं। दादी का फुल अटेंशन केवल चीज़ों की क्वालिटी पर नहीं लेकिन आत्मा की क्वालिटी पर होता। दादी हमेशा कहतीं, आत्मा की क्वालिटी बहुत अच्छी होनी चाहिए। दादी जी हमें ये समझाती रहीं कि बाबा जो कहता है कि 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी ये आत्मा की डिवाइन क्वालिटी है और वह क्वालिटी हमारे में तभी आती है जब हमारा एक-एक संकल्प, एक-एक कर्म, छोटे से छोटी बात पर भी हमारा अटेंशन हो।

तत्कालिन महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के साथ दादी जानकी जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए तत्कालिन माननीय प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव, राज्यपाल चन्ना रेड्डी,राज., दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी तथा अन्य गणमान्य लोग।

दादी जानकी जी को ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स द्वारा 'डॉ. ए.पी.जे. कलाम वर्ल्ड पीस अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

प्रसिद्ध लेखक दीपक चोपड़ा से मुलाकात करते हुए दादी जानकी जी।

फिल्म अभिनेता चिरंजीवी व उनकी धर्मपत्नी सुरेखा जी से मिलते हुए दादी जानकी जी।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता ऋतिक रोशन को रक्षासूत्र बांधते हुए दादी जानकी जी।

मुलाकात के दौरान प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री ग्रेसी सिंह के साथ दादी जानकी जी।

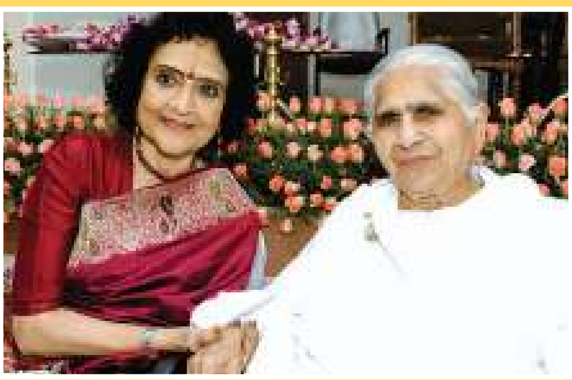

फिल्म अभिनेत्री वैजयन्ती माला के साथ दादी जानकी जी।

दादी जानकी जी को रशिया में गोल्डन सर्टीफिकेट से सम्मानित किया गया।

योगविद्या, जिससे सारे पुरुषार्थ सम्पूर्ण हो जाते

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

एक तरफ बाबा कहते हैं 'इच्छा मात्रम अविद्या', दूसरी तरफ है, इच्छा बिगर योग नहीं लगता। इसका क्या मतलब है? किन इच्छाओं की अविद्या हो? यह जो संसार है, इसके पदार्थों की इच्छा, इसके व्यक्तियों की इच्छा, भोग के पदार्थों की इच्छा, तृष्णा जो पहले से हमारे में रही हुई है, इनकी अविद्या। जितनी इन भौतिक इच्छाओं की अविद्या होगी उतनी हमारे योग की गुणवत्ता होगी। योग की हमारी इच्छा जितनी प्रबल होगी उतनी इन दुनियावी इच्छाओं की अविद्या होगी। वरना संसार के प्रति हमारा आकर्षण होगा, संसार के पदार्थों को प्राप्त करने की इच्छा रखेंगे। जितना हम उनकी तरफ भागेंगे, उतना हमारा योग कम लगेगा और उतना हम योगी जीवन से दूर होते जायेंगे। जब हमारे में यही एक इच्छा होगी कि हमें बाप समान बनना है, और कुछ नहीं चाहिए तब योग लगेगा। बाबा ने सुनाया है कि हम में कौन-सी इच्छायें होनी चाहिए, और कौन-सी नहीं होनी चाहिए। योग की इच्छा इतनी तीव्र हो कि वह लगन का रूप ले ले। बाबा कहते हैं योग अग्नि और लगन को भी कहते हैं अगन है। इसलिए इच्छा की यह लगन जितनी तीव्र होगी, उतनी योग की अगन भी तीव्र होगी। हमारी इच्छा इतनी तीव्र हो कि मैं ऊंचे दर्जे का योगी बनूँ। मेरा मन बाबा में टिका रहे, मैं उस आनन्द रस को पीता रहूँ, मेरा सब भोग-विलास समाप्त हो जाये। मेरा मन कौए की तरह इस संसार रूपी कचड़े पर बैठना छोड़कर, अब हंस बन जाये। अब मैं परमात्मा के ज्ञान मोती चुगता रहूँ। जैसे चात्रक पक्षी के लिए कहा है कि स्वाति नक्षत्र की बारिश की बूंद पीकर उसको मोती बना देता है, वैसे मैं भी बाबा से ज्ञानामृत पीता रहूँ। अब मुझे शिव बाबा मिल गया, अब मेरा मन शिव बाबा में रमज़ा है। मैं उसी में मगन रहूँ। यही मेरी एकमात्र इच्छा हो।

योग में मगन अवस्था निर्भर है लगन पर, लगन निर्भर है इच्छाओं पर। इच्छा क्या है? हमारे मन का सम्बन्ध कईयों से लगा हुआ है, कई वस्तुओं में आसक्ति है, आकर्षण है, उसी का नाम सामूहिक रूप से इच्छा है। कुछ न कुछ वहाँ से चाहिए, उनसे कुछ उम्मीद रखी हुई है। कुछ सहारा, कुछ आधार वहाँ का लिया हुआ है। मन को उन सबसे निकाल कर एक तरफ लगाना है। इसी को मन्मनाभव कहते हैं। मन्मनाभव भी कैसे होंगे? जब हमारी इच्छा यही होगी कि मुझे एक बाप को याद करना है, उसी से ही सब कुछ पाना है। एक परमपिता परमात्मा, दूसरा न कोई, यही इच्छा शक्ति का दूसरा नाम है।

दूसरा है, विचार शक्ति, संकल्प शक्ति। योग क्या है? श्रेष्ठ संकल्पों की स्मृति। हमारे ये संकल्प हैं याद के संकल्प। इन संकल्पों में और कोई संकल्प मिश्रित नहीं होंगे। ऐसा नहीं, एक संकल्प आ गया कि मैं आत्मा हूँ, दूसरा आ गया कि मैं एक डॉक्टर हूँ, मुझे डिस्पेन्सरी में जाना है। तो हमारा योग कैसे लगेगा? योग करने के लिए बैठ गये, योग करना आरम्भ किया उतने में याद आया कि अरे, आज तो मुझे रसोई में जाकर खाना बनाना है। यह योग नहीं हुआ। योग है जिसमें एक संकल्प की धारा होती है। धारा में अन्तर नहीं होता, निरन्तरता होती है। तेल की धारा में अन्तर नहीं होता, तेल की बूंद एक से एक मिली हुई रहती है। निरन्तर गिरता रहता है। ये जो हमारे संकल्प हैं एक से एक जुटे हुए हैं, आत्मा के, परमात्मा के, परमधाम के, स्वधर्म के, स्वस्थिति के। इनके बारे में ही हमारे संकल्प हों, दूसरे संकल्प कोई न आयें। ये शक्तिशाली संकल्प हों, अखण्ड संकल्प हों, निश्चयात्मक संकल्प हों। योग का दूसरा नाम ही निश्चय है। 'मैं आत्मा हूँ' यह सिर्फ संकल्प नहीं है, यह निश्चय है, इसमें मैं निश्चयात्मक रूप में स्थित होता हूँ कि मैं आत्मा हूँ। जब हम निश्चयपूर्वक संकल्प करेंगे तभी अनुभव होगा। अगर किसी को योग में अनुभव नहीं होता है माना उसने योग में जो भी संकल्प किया, निश्चयात्मक संकल्प नहीं किया अर्थात् उसके संकल्पों में निश्चय नहीं था। इसलिए योग में हमारे निश्चयात्मक संकल्प हों ताकि हम अनुभव कर सकें।

तीसरी है, विवेक शक्ति जिसको हम निर्णय शक्ति कहते हैं। जब तक हमारा सद्विवेक जाग्रत न हो, हमने निर्णय न किया हो कि यह संसार अब विनाश होने वाला है। यह नरक बन चुका है, यह आसुरी संसार है, यह तमोप्रधान हो चुका है, यह निःसार हो चुका है और हमको जाना है सतयुग की ओर जहाँ सुख का भण्डार है, हमको जाना है वापिस घर, समय आ चुका है, तब तक हम योग की गहराई में जा नहीं सकते, अनुभव कर नहीं सकते। मम्मा हमेशा यही सुनाती थी कि समय अपना फैसला दे रहा है, भगवान अपना फैसला दे रहा है, अब तुम भी अपना फैसला करो कि करना क्या है। जब तक कोई मनुष्य अपने जीवन में अन्तिम निर्णय नहीं लेता, तब तक कार्य पूर्ण रूप से आरम्भ नहीं होता। अगर होता भी है तो ठीक ढंग से नहीं होता। जिसका मन अस्थिर होगा, हिलने-डोलने वाला होगा वह व्यक्ति खुद ही मूंझा हुआ होगा कि क्या करूँ, क्या न करूँ, क्या सही है, क्या गलत है। इसलिए जिसका जितना प्रबल निर्णय है, जिसमें जितना यह विवेक जाग्रत हो चुका है, जिसमें ये ज्ञान की बातें ठोस रीति से बैठ गयी हैं, आप देखेंगे उसमें योग की पराकाष्ठा भी उतनी ही रहेगी। जिस दिन उसके मन में बाबा के बारे में, आत्मा के बारे में या और किसी ज्ञान के विषय में संशय होगा, आप देखेंगे उस दिन उसकी स्थिति डांवाडोल होगी। इसलिए सशक्त योग के लिए हमारी विवेक शक्ति अथवा निर्णय शक्ति भी अटल हो। योग में अनुभव करने के लिए हमारी इच्छा शक्ति, विचार शक्ति, निर्णय शक्ति साथ देंगी।

दादी जानकी जी को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास,यू.एस.ए. द्वारा 'मोस्ट स्टेबल माइंड' के टाइटल से नवाज़ा गया।

दादी जानकी जी को गीतम यूनिवर्सिटी,विशाखापट्टनम द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाज़ा गया।

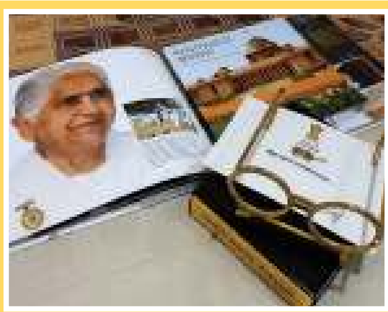

दादी जानकी जी को भारत सरकार द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' के ब्रांड एम्बेसडर के रूप में नियुक्त किया गया।

जनरल बिपिन रावत,चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ से मिलते हुए दादी जानकी जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्मिलत हुए तत्कालिन माननीय प्रधानमंत्री एच.डी. देव गौड़ा जी व पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी। साथ हैं दादी प्रकाशमणि जी, दादी हृदयमोहिनी जी, दादी जानकी जी तथा अन्य।

कैसे पहचानें मनमत है या बाप की श्रीमत...!

- ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

मान लिजिए जैसे आपने बाबा से कोई बात कही और आप बाबा से सॉल्यूशन चाहते हैं और उसके बाद अगर आपके मन में कोई विचार आया अब ये कैसे पहचाना जाये कि ये मनमत है या परमात्मा की श्रीमत! तो देखो मन जो है ना ये गेम्स ज़रूर खेलेगा, इसीलिए जैसे ही आपने कोई संकल्प रखा तो मन गेम्स खेलना चालू कर देता है और इसीलिए बहुत अच्छा विचार देते हुए आपको यही महसूस करायेगा कि ये परमात्मा की ही टचिंग है या परमात्मा की ही ये श्रीमत है। लेकिन सहज भाव से अगर मैं कहूँ कि अगर आप वेरीफाय करना चाहते हैं कि वो जो टचिंग है वो परमात्मा की है या आपकी मनमत है, तो दूसरे दिन या उसी दिन मान लो आपने अमृतवेले बाबा को कहा है तो उसी दिन की मुरली को बड़ा ध्यान से पढ़ो। आपके मनोभाव का जवाब उस दिन की मुरली में आ जायेगा, या अगले दिन उसका जवाब मुरली में मिल ही जाता है। ये हो नहीं सकता कि भगवान जवाब न दे। ये कईयों का अनुभव है कि मान लो कोई विचार आया, सुबह मुरली सुनने गये तो मुरली में उसका जवाब ज़रूर मिला। इसीलिए आवश्यकता है कि मुरली के साथ उसको वेरीफाय किया जाये। और तब आपको महसूस होगा कि ये बाबा की टचिंग है या फिर आपका मन गेम्स खेल रहा था आपके साथ।

दूसरा तरीका ये है कि मान लो आपने मुख से तो कहा बाबा को लेकिन फिर भी अगर आप चाहते हैं कि आपको जवाब मिले तो आप बाबा के सामने दो चिट्ठी रखो। पूरा प्रश्न बाबा के सामने रखो, आपका क्या प्रश्न है उसको लिखकर फिर उसमें उत्तर लिखो एक में हाँ लिखो, एक में ना लिखो। और इन चिट्ठियों को जब बाबा के कमरे में अमृतवेले योग में बैठते हो तो उस समय बाबा के सामने रखो। और योग करने के बाद अगर आपके घर में कोई बच्चा है तो उनको कहो कि दोनों चिट्ठी में से कोई एक उठाकर ले आओ। और अगर आपके पास कोई नहीं है और आप अकेले रहते हैं तो कोई बात नहीं, आप दो मिनट बाबा को याद करते हुए हाथ में चिट्ठी उठायें। उसमें फिर निश्चयबुद्धि इतना होना चाहिए जो आया उसका पालन करना है। हाँ आया तो भी, ना आया तो भी। ये समझो कि बाबा ने मुझे इसका हाँ या ना में जवाब दिया है। और फिर आप ये देखिए कि आपके भी मन में कौन-सी बात आई थी, ये आई थी या नहीं! कई बार ऐसा होता है जो आपने सोचा भी नहीं होगा वो जवाब आ गया या आपने हाँ के विषय में सोचा ही नहीं होगा और हाँ कह दिया बाबा ने। फिर आप सोचो कि दोबारा रख दें, और दोबारा रखने पर जब आपके मन का जवाब आ जाये और फिर आप कहें कि देखा बाबा ने पहली बार शायद मेरी परीक्षा ली होगी और दूसरी बार में कह दिया ना, तो मेरे मन की टचिंग भी राइट थी। लेकिन नहीं, दोबारा रखने से फिर जवाब नहीं मिलता। इसीलिए पहली बार में जो आया उसपर 100 प्रतिशत निश्चयबुद्धि होकर फॉलो करना ही होगा, चाहे हाँ आये या ना।

बाबा जो उत्तर देता है वो पहली बार में ही देता है इसीलिए ये दो तरीके हैं जानने के कि मनमत है या परमात्मा की श्रेष्ठ मत। उसको समझने के लिए या तो चिट्ठी बाबा के सामने रखो या फिर सुबह की मुरली में आपको जवाब ज़रूर मिल जायेगा। उस दिन नहीं तो दूसरे दिन मिल जायेगा, लेकिन मिलेगा ज़रूर।

! यह जीवन है !

अगर हमारी नकारात्मक प्रवृत्ति है अर्थात् सोचने का तरीका है, तो चाहे हमारे सामने कितना ही अच्छा क्यों न हो रहा हो, लेकिन हम उसमें भी बुराई खोज ही निकालेंगे। जबकि सकारात्मक प्रवृत्ति का व्यक्ति हर हाल में अच्छा तलाशने की ही कोशिश करता है।

बस यही एक हमारे सोचने का तरीका- हमारे सुख-दुःख का मुख्य कारण बन जाता है। जो फिर हमारे जीवन को सदा प्रभावित करता रहता है। अतः यदि हम अपने जीवन में सुख शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपने विचारों में सकारात्मकता लाने की ज़रूरत है। तभी हम सुख-शान्ति, खुशी, आनन्द, प्रेम, शक्ति इत्यादि सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे।

हमारा ओरिज़नल स्वभाव-संस्कार... !!!

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हम आत्माओं का ओरिज़नल स्वभाव-संस्कार, सद्भावना, दया है। किसी को दर्द में देखकर हमें अच्छा नहीं लग सकता। जब हमें पता चलता है कि कोई बीमार है या हमें पता चलता है कि किसी के यहाँ डेथ(मृत्यु) हुई है तो हमें बुरा लगता है। ये हमारा संस्कार है। मैं किसी को दर्द में नहीं देख सकता या सकती हूँ।

यहां तक की जैसे हम बाल्कनी में खड़े हैं। एक नन्ही-सी चिड़िया है लेकिन वो कहीं फँस गई है, पँख फड़फड़ा रहे हैं लेकिन हमारा दिल करता है कि हम तुरन्त उसकी मदद करें, उसको फ्रीडम दें, हमें उसको ऐसे देखकर अच्छा नहीं लगता। मान लीजिए हम सड़क पर चल रहे हैं और वहाँ एक डॉग और कैट उनको चोट लग गई है। उनके पैर से खून निकल रहा है हमें अच्छा नहीं लगता है और हम चाहते हैं कि उसकी किसी तरह से मदद करें। ये हमारा संस्कार है, सेवा करना। दूसरों के दर्द में उनको मदद करना। दूसरों के दुःख को खत्म करके उनको सुख देना। ये हमारा ह्यूमन नेचर है। ये हमारा व्यक्तित्व है। तो जब ये हमारा व्यक्तित्व है तो हम किसी को दर्द देकर किसी की हिंसा करके और किसी की मृत्यु करवाके हम उसको अपना खाना कैसे बना सकते हैं! आपको नहीं लगता कि ये हमारा संस्कार नहीं है! ये हमारा स्वभाव नहीं है फिर ये हमने कैसे कर लिया! क्योंकि जब वो चीज़ हमारी प्लेट में आती है तो क्या दिखाई नहीं देता है उसके साथ क्या कुछ नहीं हुआ होगा! कितना दर्द हुआ होगा, उसकी हिंसा हुई है, और उसको हम स्वीकार कर रहे हैं।

हम अपनी सेहत के लिए, अपने टेस्ट के लिए अपने आपसे पूछें, चाहे हम कितने समय से, कितने सालों से, उस चीज़ को खाते आए हैं। आप क्या खा रहे हैं? जैसा अन्न, वैसा मन होगा। क्या हम किसी के दर्द का, किसी की मृत्यु का अन्न बनाकर अपने मन को दे सकते हैं? नहीं। इसके बारे में सोचिएगा। वो जो आपने खाया था, एक सेकण्ड आप उसको सामने लेकर आइए। फिर उसकी जर्नी को देखिए। जो आपकी प्लेट में था वो एक लिविंग बीइंग(जीवित प्राणी) था। उसको आपकी प्लेट में लाने के लिए किस तरह से पकड़ा गया। क्या उसके साथ किया गया। फिर उसकी हिंसा की गई। पांच मिनट में वो आपका खाना बनकर आपके पेट में चला गया।

यह हम नहीं हैं। इसे बदलने का समय आ गया है। हमारी जो नैचुरल फीलिंग्स हैं वो हैं केयर एंड कम्पैशन(ध्यान रखना और करुणा)। अब यही टाइम है बदलने का। आइए एक एक्सपेरिमेंट करते हैं, एक नई डाइट के साथ। सात्विक अन्न, शुद्ध अन्न, सेहत बहुत-बहुत सारी चीज़ों से मिल जाती है। सेहत के साथ मन को सुख, शांति, कम्पैशन एंड केयर ये संस्कार मिलें, ये भी हमारी ज़िम्मेवारी है। अपने लिए और उनके लिए जिनके साथ हम वो गलत कर रहे हैं। चलिए अगले कुछ दिन के लिए हम एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं। अगर आप आज ही प्रतिज्ञा कर सकते हैं कि आप इस तरह के खाने को आज से ही त्याग देते हैं तो ये तो बहुत अच्छा, और अगर आज प्रतिज्ञा नहीं कर सकते हैं तो एक एक्सपेरिमेंट तो कर सकते हैं! चलिए आज से अगले कुछ दिनों तक, 21 दिनों तक करते हैं। केयर एंड कम्पैशन ये मेरा स्वभाव है, ये मेरा संस्कार है और फिर अगर आप इस एक्सपेरिमेंट को करते हैं जोकि हमें पूरा विश्वास है कि आप करेंगे ज़रूर।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सुरेश ओबरॉय से मिलते हुए दादी जानकी जी। साथ हैं दादी हृदयमोहिनी जी।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा को गुलदस्ता भेंट करते हुए दादी जानकी जी।

तत्कालिन महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के साथ हैं दादी जानकी जी, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. हंसा बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

भारत रत्न मदर टेरेसा को टोली देते हुए 'नोबल पीस प्राइज़' से सम्मानित दादी जानकी जी।

रब्बी जी से मुलाकात करते हुए दादी जानकी जी। साथ हैं ब्र.कु.जयंती दीदी।

त्रिआयामी सोच ने विश्व को दिया नया आयाम

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

वैसे तो ज़िन्दगी में करने को बहुत कुछ है, कुछ पल निकालिये ईश्वर के नाम पर। ये दुनिया के लिए है, लेकिन ईश्वर ही जिसका सबकुछ हो, जिसने ईश्वर के

लिए ही सोचा, ईश्वर के लिए ही बोला, ईश्वर के लिए ही कर्म किया, उस विरले, उस अद्भुत व्यक्तित्व को हम दादी जानकी कहते हैं। दादी के तीन शब्द या कहें स्लोगन 'सच्चाई, सफाई और सादगी' लोगों में जान फूंकने के लिए एक संजीवनी बूटी की तरह काम करते हैं। उनके अव्यक्त होने के एक वर्ष बाद भी उनकी हर एक बात को सभी जीवंत रूप से पालन कर रहे हैं, गुणगान भी कर रहे हैं, महिमा भी कर रहे हैं और साथ ही साथ एक-दूसरे को प्रेरणा भी दे रहे हैं कि हमें भी उस व्यक्तित्व जैसा अपना व्यक्तित्व बनाना चाहिए। अब दादी के इन तीन शब्दों की गहराई में चलते हैं।

सच्चाई

किस बात की सच्चाई? उदाहरण के तौर पर हम सभी जानते हैं कि सत्य स्वयं सिद्ध होता है, उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। तो यदि हम सच में, स्वयं में सच्चे हैं, तो हम निश्चित रूप से प्रत्यक्ष होंगे ही होंगे। इसमें हम कभी ये नहीं कह सकते कि हम तो सच्चे हैं, पर कोई हमें समझ नहीं पा रहा है। लेकिन यदि कोई सच्चा है तो वो प्रत्यक्ष और सिद्ध होगा ही होगा। इसको अगर हम दूसरे तरीके से सोचें तो कई बार हम पूरे जीवन सबको बताने और जताने में लगे रहते कि हम सच्चे हैं और ये भी जताने की कोशिश करते कि लोग हमसे सच्चे नहीं हैं। इससे क्या होता है कि हम अपनी सच्चाई को उजागर तो कर रहे हैं लेकिन साथ-साथ लोगों से भी खुद को प्रूव करवाने की कोशिश कर रहे हैं कि हम सच्चे हैं। लेकिन जो सच्चा है उसके वायब्रेशन हमेशा अच्छे ही रहते हैं, तो दादी सत्य थीं, इसलिए उनकी आवाज़ में ओज था, वो आत्मा को और परमात्मा को गहराई से समझ चुकी थीं, इसलिए सत्यता से सारी बात सबके सामने रख पाती थीं।

सफाई

आज हमारी बुद्धि थोड़ा दुनिया का भी सोच लेती है, थोड़ा बाहर का भी सोच लेती है, थोड़ा अंदर का भी सोच लेती है और थोड़ा परमात्मा के बारे में भी सोच लेती है। इसको हम कहते हैं, मिक्स्ड बुद्धि। उदाहरण के लिए जैसे आज हमारे अंदर ज्ञान तो है, समझ तो है कि ये सभी आत्मायें हैं, लेकिन कहीं न कहीं कास्ट, कहीं न कहीं क्लास, कहीं न कहीं स्टेज, कहीं गुजराती, कहीं मराठी, कहीं बंगाली, कहीं पंजाबी, ये सारी बातें जुड़ी हुई हैं। तो हम अभ्यास तो करते हैं आत्मा का कि हम आत्मा भाई-भाई हैं, लेकिन बीच-बीच में हमारे अंदर से कुछ-कुछ बातें में कमेंट भी निकलता है। किसी को अगर हम परिचय दें भी भगवान का, किसी को हम बतायें भी इस ज्ञान के बारे में, लेकिन साथ-साथ ये भी बुद्धि में चलता रहता है कि ये वहाँ का है, ये इस कास्ट का है, ये इस क्लास का है, ये वीआईपी है, तो उसके अंदर वो वाली बात सफाई से नहीं जायेगी जो हम कहना चाहते हैं। ये बात बहुत गहराई से समझ में आ जानी चाहिए कि जब हमारी आत्मा पूरी तरह से साफ हो जाती है, माना अंदर कोई भी ऐसी बात नहीं होती जो देह से कनेक्टेड हो या उसकी कोई पुरानी बात हमारे अंदर हो, तो हम बात को सच्चाई से कह पायेंगे और साथ-साथ सफाई का मतलब कि बिल्कुल क्लीन तरीके से उसको वो बात समझ में आयेगी। तो आज हम अभ्यास तो करते हैं लेकिन साथ-साथ, बीच-बीच में ये भी चलता रहता है। पूरी तरह से देह और देह के इन बातों से जो नहीं मरा होगा, वो कभी भी बात को कहेगा लेकिन वो बात सबको समझ में नहीं आयेगी। इसलिये सच्चे हैं, साफ नहीं हैं। कुछ न कुछ, कोई न कोई बात मिक्स्ड है। दादी पूरी तरह से साफ थीं, बहुत गहराई से आत्मा का अभ्यास किया था, कोई भी ऐसा-वैसा नहीं था, आत्मिक भाव था, इसलिए उनकी बात सबको समझ में आती थी।

सादगी

ये विषय भी बड़ा ही गूढ़ है। परमात्मा सबका है, सबके लिए है, ये ज्ञान समझ में आ जाने के बाद एक सूक्ष्म हमारे अंदर ईगो भी आ जाता है कि मुझे तो परमात्मा की भी समझ आ गई, आत्मा की भी समझ आ गई। ये बहुत अच्छी बात है, बहुत नशे की बात है, लेकिन ये ज्ञान परमात्मा ही का है, उन्हीं के द्वारा दिया गया है, ये याद बहुत कम रहता है। इसलिए निमित्त भाव हमारे अंदर सादगी पैदा करता है। वो अभिमान शो नहीं करता, इसका पहनावे से भी लेना-देना होता है कि जैसा परमात्मा ने कहा, सादगी से रहना और सादगी से निमित्त रूप से अपनी बात कहनी लेकिन अभिमान न दिखना। ये याद रहना, ये सादगी है। ये दादी जानकी के व्यक्तित्व से झलकता था। और इन तीनों चीज़ों ने ही उन्हें महान बना दिया।

तो अगर हम बहुत भी सच में उस महान व्यक्तित्व को थोड़ा-सा छूना भी है तो हमें अपने अंदर इन तीन बातों को गहराई से उतारना होगा। तब जाकर हम उस व्यक्तित्व को थोड़ा-बहुत छू पायेंगे। ये कार्य बड़ा ऊँचा और गहरा है। ऐसी महान हस्ती जिन्होंने पाँचों महाखण्डों को अपनी इन्हीं बातों से बदल दिया, ऐसे व्यक्तित्व को शत्-शत् स्मरणांजलि।

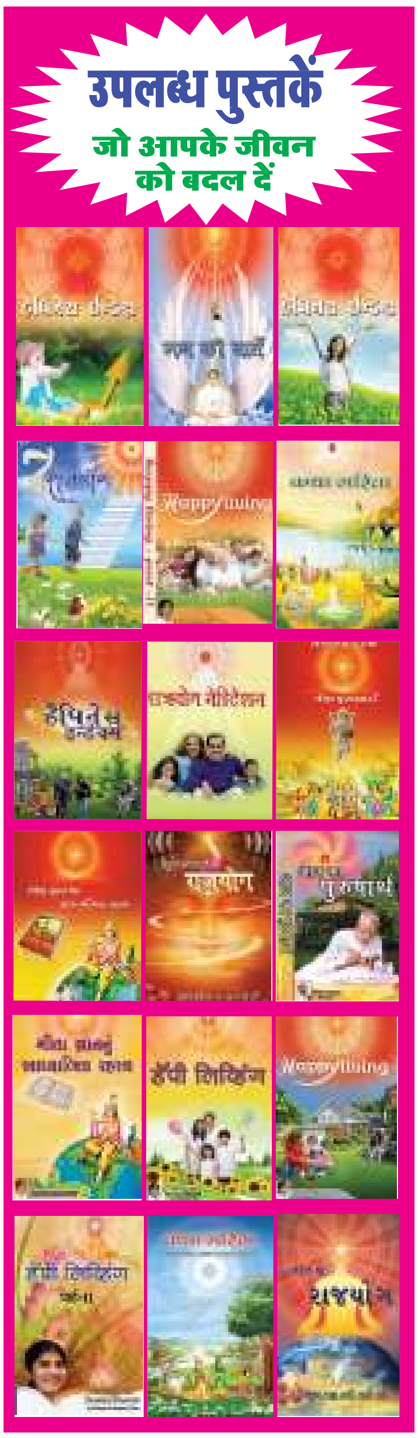

मन की बातें

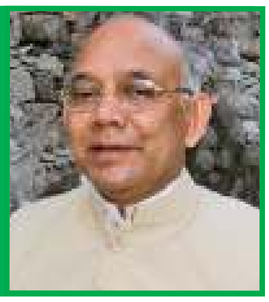

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मेरा नाम राजाराम है। यदि हमें किसी डिप्रेशन पेशेन्ट को सात दिन का कोर्स, योग करना, स्वमान का अभ्यास कराना हो तो कैसे कराना चाहिए? इसके लिए कृपया करके कोई विधि बतायें।

उत्तर : आजकल डिप्रेशन के पेशेन्ट बहुत आ रहे हैं। डिप्रेशन संसार में बढ़ रहा है। कई टीचर या भाई-बहनें होंगे तो कहेंगे कि योग सीखो तो डिप्रेशन चला जायेगा लेकिन सबको पता होना चाहिए कि डिप्रेशन के पेशेन्ट का ब्रेन इतना सक्षम नहीं रह जाता कि वो कहीं एकाग्र कर सके। कोई चिन्तन कर सके। डिप्रेशन पेशेन्ट के लिए कुछ अलग तरह का चिन्तन, कुछ अलग तरह की टीचिंग रखनी चाहिए। जैसे उन्हें आत्मा का ज्ञान दें बस। कंसंट्रेशन की बात न करें। उन्हें अच्छे वायब्रेशन में बिठाएं, उन्हें स्वमान दें कि तुम तो बहुत अच्छे हो, तुम तो भगवान के बच्चे हो, उसकी शक्तियां तुम्हारे साथ हैं। उसका हाथ तुम्हारे सिर पर है। उसे कहा करें कि कुछ क्षण महसूस करें कि भगवान का हाथ मेरे सिर पर है। मैं एक महान आत्मा हूँ ये प्रैक्टिस कईयों को कराई है, ये उसे समझा दिया जाये कि तुम भगवान के बच्चे हो, तुम महान हो 21 बार लिखना शुरु करो। रात को भी लिख सकते हैं, दिन में भी लिख सकते हैं। कोई उनसे लिखवाये क्योंकि डिप्रेस व्यक्ति ऐसा होता है कि वो कुछ भी करने की हिम्मत नहीं रख पाता। दो-चार बार लिखेगा और फिर कहेगा कि मुझसे नहीं हो रहा है। कोई उनसे 21 बार न सही कम से कम 11 बार रोज़ लिखवायें। ताकि उसकी रूचि पैदा हो, उसके ब्रेन को एनर्जी जाने लगेगी। पानी चार्ज करके भी पिला सकते हैं। मैं परमपवित्र आत्मा हूँ इस स्वमान से पानी को दृष्टि देकर फिर उन्हें पानी पिलायें। और वो सुबह जब भी उठें तो उठते ही हाथ जोड़कर कहें कि हज़ारों साल पूर्व जन्मों में मैंने जिसको भी कष्ट दिया हो, मैं उनसे क्षमा याचना करता हूँ। आप सब मुझे क्षमा करें। ये ऐसा आपमें से किसी को उनको रोज़ कराना होगा।

प्रश्न : मेरा नाम रितु सक्सेना है। मैं तीन साल से विद्यालय से जुड़ी हुई हूँ। एक हफ्ते से दस दिन तक मेरा ज्ञान-योग बहुत अच्छा चलता है, स्थिति अच्छी रहती है। फिर अचानक योग करने का मन ही नहीं करता। और मन में कोई न कोई ऐसी बात उठने लगती है जो बहुत परेशान करती है। कृपया बतायें मैं क्या करूँ?

उत्तर : ये कुछ लोगों के साथ क्रम चलता है। कुछ भी करने को मन ही नहीं करता। इसमें दो चीज़ समझ में आती है जो इस समय बहुत महत्वपूर्ण है। जो मनुष्य के पास्ट के कर्मों के खाते हैं, विकर्म जिन्हें कहते हैं वो जागृत हो जाते हैं। अभी ये प्रश्न भी उठ सकता है कि ये दस दिन के बाद ही क्यों जागृत होते हैं एक महीने के बाद क्यों नहीं! ये स्थिति है अलग-अलग मनुष्यों के मस्तिष्क के अन्दर। कभी-कभी बहुत अच्छी स्थिति का अभ्यास करते-करते या योग करते-करते ब्रेन की जो शक्तियां हैं वो भी क्षीण होने लगती हैं। तो आपको क्या करना है कि जिस दिन आपको ये पता चले कि आपकी स्थिति में गिरावट आ रही है तो आपको उस दिन थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। उठते ही अपने मन में कुछ सुन्दर विचारों का सजृन करें। मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत महान आत्मा हूँ, स्वयं भगवान मेरे साथ हैं। मेरे भाग्य का सितारा विश्व में चमक रहा है। जब मन स्थिर नहीं होता है तो मेडिटेशन में खिंचातान करने लगते हैं और फिर परेशान होते हैं कि ये क्या हो रहा है। तो आप योग छोड़ दें और अव्यक्त मुरली पढ़ें, अच्छी क्लासेस सुनें और किसी भी टाइम 108 बार लिख लें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तो जो गिरावट स्थिति दस दिन, बारह दिन चलती है वो उतना नहीं चलेगी। मान लीजिए आप लिखती हैं कि कि मैं महान आत्मा हूँ, फिर महसूस करें कि ये सत्य है ये भगवान ने कहा है कि तुम महान हो। मैं महान हूँ। इसको अन्दर ले चलें। फिर मैं इष्ट देवी हूँ। एक-एक स्वमान को ऐसे ही करें। भगवान ने याद दिलाया मंदिरों में जिनकी पूजा होती है वो तुम हो। हाँ, वो मैं ही हूँ। तुम इतनी महान, पूज्य, पवित्र सबकी दाता, सबकी मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली, सबको वरदान देने वाली देवी ये तुम ही हो। ऐसे ये तीन-चार बार चिंतन में लायें। जो सोई हुई शक्तियां हैं या उस समय जो कुछ भी हुआ है वो समाप्त हो जायेगा। और आपकी शक्तियां जागृत हो जायेंगी। और आप उससे पार हो जायेंगी।

प्रश्न : मैं एक कुमार हूँ। मुझे ऑफिस में कुछ फ्री टाइम मिल जाता है, जिसमें मैं ज्ञान स्टडी कर लेता हूँ परन्तु जब योग करता हूँ तो नींद आने लगती है। तो कृपया बतायें कि मैं अपने फ्री टाइम को यूटिलाइज़ कैसे करूं?

उत्तर : आप ऐसा करिए थोड़े दिन भोजन थोड़ा कम कर लें। और आपको वो चीज़ भी देख लेनी चाहिए जो चीज़ें आपके शरीर को भारी करती हैं। अगर आप कर सकते हैं तो एक दिन में एक टाइम भोजन करें और एक टाइम फलाहार, एक टाइम कच्ची सब्जियां लें, और थोड़ा प्राणायाम भी करना चाहिए। आपको अपने फ्री टाइम में ज़्यादा अभ्यास अशरीरी होने का करना चाहिए। अगर आप ये सब कर लेंगे तो आपको नींद नहीं आयेगी। कुछ सुन्दर थॉट्स भी लिखा करें। तो चिंतन शक्ति आपके अलबेलेपन को दूर करेगी। चिंतन शक्ति से ब्रेन बहुत एक्टिव हो जाता है। और उसको एनर्जी मिलती है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

ऑस्टियोपोरोसिस डाइट

मजबूत हड्डियों के लिए करें इन फलों का सेवन

स्वास्थ्य ऑस्टियोपोरोसिस के कारण हड्डियां कमज़ोर हो जाती हैं और कमज़ोर होने से फ्रैक्चर का खतरा बढ़ जाता है। हड्डियों से जुड़े रोग और हड्डियों के कमज़ोर होने के कई कारण हैं। कुछ फलों का सेवन और जीवन शैली में परिवर्तन हड्डियों को हेल्दी बनाने में मदद कर सकता है और ऑस्टियोपोरोसिस के जोखिम को रोक सकते हैं, या ऑस्टियोपोरोसिस के लक्षणों से निपटने में मदद कर सकते हैं। अगर आप भी इससे पीड़ित हैं तो नीचे बताये गए इन फलों का सेवन अवश्य करें...

जोड़ों और हड्डियों का दर्द न सिर्फ असहनीय होता है, बल्कि इससे आपके दैनिक कामकाज में रुकावट भी आने लगती है। ऑस्टियोपोरोसिस एक ऐसी स्थिति है जो आपकी हड्डियों को बहुत कमज़ोर या नाजुक बना देती है, जिसके नतीजे में आखिरकार हड्डियों का नुकसान भी होता है। हमारा शरीर निरंतर पुरानी हड्डी के टिश्यू को नए में बदलता है, जबकि ऑस्टियोपोरोसिस में हड्डी का नया निर्माण देर से होता है। स्थिति ज़्यादातर बुजुर्गों या महिलाओं को नुकसान पहुंचाती है, लेकिन आजकल ये समस्या युवा आबादी में भी दिखाई देना आम हो गया है।

ये चिंता का विषय है क्योंकि ऑस्टियोपोरोसिस से पीड़ित लोगों को मामूली टक्कर के बाद भी बुरी तरह से चोट पहुंच सकती है। अगर आप भी ऐसे लक्षणों से रूबरू हैं, तब पेचीदा होने से पहले सबसे अच्छा है कि फौरन डॉक्टर से संपर्क करें। इसके अलावा, अपनी डाइट को कुछ मौसमी फलों के साथ मजबूत करने का भी अच्छा विचार है। ये फल प्राकृतिक तौर पर हड्डियों को मजबूत करने के लिए जाने जाते हैं। मजबूत हड्डियों के लिए आपको गर्मी के चंद फल खाने चाहिए।

सेब : आप सेब साल भर हासिल कर सकते हैं। सेब हड्डियों के निर्माण ब्लॉक कैल्शियम और विटामिन सी से भरा होता है। ये दोनों घटक कोलेजन का उत्पादन और नई हड्डी के लिए प्रोत्साहित करने का काम करता है।

पपीता : ये मीठा, गूदेदार फल गर्मी को सहने योग्य बनाने का काम करता है। अच्छी बात ये है कि पपीता बहुत स्वस्थ भी है। विटामिन सी में बहुत धनी पपीता खाने से आपकी हड्डी, स्किन और इम्युनिटी के लिए जादुई असर कर सकता है।

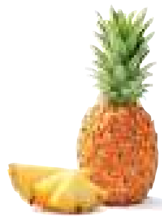

अनानास : ये तीखा और मनोरम फल पोटैशियम से भरपूर होता है। रिसर्च के मुताबिक, पोटैशियम का इस्तेमाल एसिड लोड को बेअसर करने में मदद कर सकता है। और इस तरह कैल्शियम की कमी को किसी हद तक कम करता है। इसके अलावा, ये विटामिन ए और कैल्शियम का शानदार स्रोत भी है। ये दोनों मजबूत हड्डियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण घटक हैं।

स्ट्रॉबेरीज : ये सुंदर लाल बेरीज ताजगी से भरी हुई होती है और खाने से स्वास्थ्य को कई फायदे मिलते हैं। स्ट्रॉबेरीज एंटी ऑक्सीडेंट्स के साथ पैक होता है जो हड्डियों की खराबी की वजह बनने वाले फ्री रेडिकल के नुकसान से लड़ने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ये फल कैल्शियम, मैग्नीज, पोटैशियम, विटामिन के और विटामिन सी का भी अच्छा स्रोत होता है। ये सभी नई हड्डी के निर्माण की सहायता करने में मदद करते हैं।

कथा सरिता

एक अटूट विश्वास

एक आठ साल का बच्चा 1 रूपये का सिक्का मुट्ठी में लेकर एक दुकान पर जाकर कहने लगा कि क्या आपके दुकान में ईश्वर मिलेंगे?

दुकानदार ने यह बात सुनकर सिक्का नीचे फेंक दिया और बच्चे को निकाल दिया। बच्चा पास की दुकान में जाकर 1 रूपये का सिक्का लेकर चुपचाप खड़ा रहा।

उससे पूछा, ए लड़के 1 रूपये में तुम क्या चाहते हो? तो बच्चे ने उत्तर दिया- मुझे ईश्वर चाहिए। आपके दुकान में है? दूसरे दुकानदार ने भी भगा दिया।

लेकिन उस बालक ने हार नहीं मानी। एक दुकान से दूसरी दुकान, दूसरी से तीसरी, ऐसा करते-करते कुल चालीस दुकानों के चक्कर काटने के बाद एक बूढ़े दुकानदार के पास पहुंचा। उस बूढ़े दुकानदार ने पूछा, तुम ईश्वर को क्यों खरीदना चाहते हो? क्या करोगे ईश्वर लेकर? पहली बार एक दुकानदार के मुंह से यह प्रश्न सुनकर बच्चे के चेहरे पर आशा की किरणें नज़र आईं। लगता है इसी दुकान पर ही ईश्वर मिलेंगे।

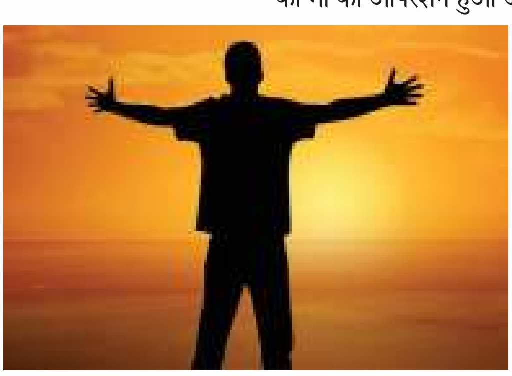

बच्चे ने बड़े उत्साह से उत्तर दिया, इस दुनिया में माँ के अलावा मेरा और कोई नहीं है। मेरी माँ दिनभर काम करके मेरे लिए खाना लाती है। मेरी माँ अब अस्पताल में है। अगर मेरी माँ मर गई तो मुझे कौन खिलाएगा? डॉक्टर ने कहा है कि अब सिर्फ ईश्वर ही तुम्हारी माँ को बचा सकते हैं। क्या आपके दुकान में ईश्वर मिलेंगे? दुकानदार ने कहा, हाँ मिलेंगे। कितने पैसे हैं तुम्हारे पास?

बच्चे ने कहा सिर्फ एक रुपया। दुकानदार ने कहा, कोई दिक्कत नहीं है। एक रूपए में ही ईश्वर मिल सकते हैं।

दुकानदार, बच्चे के हाथ से एक रुपया लेकर उसने पाया कि एक रूपए में एक गिलास पानी के अलावा बेचने के लिए और कुछ भी नहीं है। इसीलिए उस बच्चे को फिल्टर से एक गिलास पानी भरकर दिया और कहा, यह पानी पिलाने से ही तुम्हारी माँ ठीक हो जाएगी।

अगले दिन कुछ मेडिकल स्पेशलिस्ट उस अस्पताल में गए। बच्चे की माँ का ऑपरेशन हुआ और बहुत जल्द ही वह स्वस्थ हो उठीं। डिस्चार्ज के कागज पर अस्पताल का बिल देखकर उस महिला के होश उड़ गए। डॉक्टर ने उन्हें आश्वासन देकर कहा, "टेंशन की कोई बात नहीं है। एक वृद्ध सज्जन ने आपके सारे बिल चुका दिए हैं। साथ में एक चिट्ठी भी दी है"।

महिला चिट्ठी खोलकर पढ़ने लगी, उसमें लिखा था- "मुझे धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको तो स्वयं ईश्वर ने ही बचाया है। मैं तो सिर्फ एक ज़रिया हूँ। यदि आप धन्यवाद देना ही चाहती हैं तो अपने बच्चे को दीजिए जो सिर्फ एक रूपया लेकर नासमझों की तरह ईश्वर को ढूंढने निकल पड़ा। उसके मन में यह दृढ़ विश्वास था कि एकमात्र ईश्वर ही आपको बचा सकते हैं। विश्वास इसी को ही कहते हैं। ईश्वर को ढूंढने के लिए करोड़ों रूपए दान करने की ज़रूरत नहीं होती, यदि मन में अटूट विश्वास हो तो वो एक रूपए में भी मिल सकते हैं। बस मन में विश्वास होना चाहिए।

पूर्व मिनिस्टर ऑफ होम अफेयर्स लाल कृष्ण अडवाणी जी के साथ ज्ञान चर्चा करते हुए दादी जानकी जी।

2009-मुम्बई में डायलॉग फॉर रिलीजियस हेड्स के दौरान दादी जानकी जी।

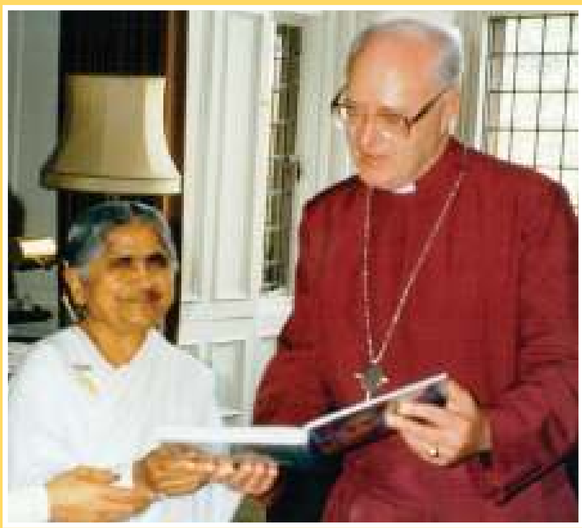

मुलाकात के दौरान आर्चबिशप कैंटरबरी के साथ दादी जानकी जी।

मूल्यों के प्रकाश से अज्ञान-अंधकार मिटा रहा संस्थान

जम्मू-कटरा। महा शिव जयंती के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ मेडिटेशन सेंटर,248 ए.,बी.सी. रोड,जम्मू तथा ब्रह्माकुमारीज़ कटरा सेवाकेन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में जीत चौक पर आयोजित भव्य कार्यक्रम में राजिन्दर मेंगी,डी.डी.सी. काउंसलर, पंथल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसी सुशिक्षित संस्था है जिसने मूल्यों के प्रकाश के माध्यम से दुनिया को अज्ञानता के अंधेरे से दूर करने में मदद की। उन्होंने कहा कि मूल्यों का व्यावहारिक अवतार बनना ही असली शिवरात्रि है। राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका ने कहा कि दुनिया का प्रारंभिक समय जिसे हम स्वर्ण युग कहते हैं, एक निर्विकारी दुनिया थी। उस युग में एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा और एकता थी। और अब परमात्मा शिव इस धरा पर आकर पुनः उसी स्वर्णिम दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। रतन सिंह मन्हास,रिटायर्ड हेड मास्टर,जनरल सेक्रेट्री,सीनियर सिटिज़न वेलफेयर फोरम,कटरा ने कहा कि यह संगठन जाति-धर्म की सीमाओं से परे है। इस विशाल संगठन का संचालन बहनों द्वारा होता है, जिसका कोई दूसरा उदाहरण कहीं और नहीं मिल सकता। शिव कुमार

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

शर्मा,अध्यक्ष,जे. एंड के. इंडियन स्टाइल रेसलिंग एसोसिएशन ने कहा कि वे इस संगठन द्वारा दिए गए ज्ञान को खुद पर लागू करने का भरपूर प्रयास करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में निर्मला देवी,डी.डी.सी. पार्षद तथा राकेश भगत,रेलवे रोड कटरा उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर शिव ध्वजारोहण किया। ब्र.कु. रजनी,कटरा सेवाकेन्द्र संचालिका ने सभी का स्वागत किया। राजयोगी ब्र.कु. रविन्दर ने संस्थान का परिचय दिया। संचालन ब्र.कु. कुसुम लता ने व आभार ब्र.कु. शारदा ने किया।

'नारी' संस्कृति की पुनर्स्थापना हेतु

अम्बिकापुर-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'संस्कृति की संरक्षक महिला' विषयक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ सरगुजा संभाग की संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी ने कहा कि हमारी पुरातन पवित्र व दिव्य संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए परमात्मा ने नारी पर ही अपना विश्वास जताया है क्योंकि नारी ही एक ऐसी शक्ति है जो समाज को दया, प्रेम, करुणा से भर सकती है। पूर्व परियोजना अधिकारी, मातृछाया अध्यक्ष वंदना दत्ता ने कहा कि यह एक ऐसी संस्था है जिसको महिला शक्ति के रूप में पहचाना जाता है। जब तक महिला का सम्मान नहीं होगा, देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता। ब्र.कु. प्रतिमा ने कहा कि मानव जाति के उत्थान के आधार पर संस्कृति का सृजन नारी ही कर सकती है क्योंकि इनमें सबको एक सूत्र में बांधने की शक्ति होती है। एम.डी. मेडिसिन डॉ. मंजू शर्मा ने कहा कि नारियों का जागरुक होना ही संस्कृति का संरक्षण कर सकता है। सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल के प्रिन्सीपल राम प्रसाद गुप्ता ने कहा कि नारी का नारी सम्मान करते हुए अपने बच्चों को भी इसके प्रति जागरुक करें। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. मंजू एक्का ने कहा कि अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होना भी नारी की एक ज़िम्मेवारी है। खुद स्वस्थ होंगे तभी परिवार को सम्भाल सकेंगे। बाणी मुखर्जी,वरिष्ठ परिवेक्षा व कल्याण अधिकारी,अम्बिकापुर,सेंट्रल जेल,छ.ग. ने कहा कि नारी को कमज़ोरियों के लिए शक्ति और मानवता के लिए वात्सल्य रूप धारण करना होगा। कार्यक्रम में शहर की दो सौ महिलायें उपस्थित रहीं।

इन बातों पर विशेष ज़ोर...

नारी ही कर सकती पुरातन संस्कृति की पुनर्स्थापना

अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होना भी नारी की ज़िम्मेवारी

नारी केवल जन्मदात्री ही नहीं, संस्कार निर्मात्री भी

ढिगावा मंडी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित 'संस्कृति की संरक्षक-महिला' विषयक कार्यक्रम में प्रसिद्ध महिला चिकित्सक डॉ. चंचल धीर,भिवानी ने कहा कि एक महिला ही पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों को पोषित करते हुए उन्हें अक्षुण्ण बनाये रखती है। नारी केवल जन्मदात्री ही नहीं, संस्कार निर्मात्री भी है। बहल व ढिगावा मंडी सेवाकेन्द्रों की संचालिका ब्र.कु. शकुंतला दीदी ने कहा कि वास्तव में महिला दिवस नारियों का नहीं, पुरुषों को सशक्त करने का दिन है। नारी तो कभी कमज़ोर थी ही नहीं, उसकी तो शेर पर

सवारी है। उसे अबला कहना या समझना मानसिक विकृति का परिचायक है। अभी नारी ने अपना आर्थिक व शैक्षणिक सशक्तिकरण किया है लेकिन जब वह आध्यात्मिक सशक्तिकरण करेगी तभी विश्व वंदनीय बनेगी, तभी फिर से भारत में वंदे मातरम का मंत्र गूंजेगा और भारत विश्व गुरू कहलायेगा। समाजसेवी व ठेकेदार महेन्द्र शर्मा ने कहा कि अब महिलायें जागरुक हो गयी हैं, उन्होंने गुलामी की बेड़ियां तोड़ दी हैं। यह शुभ संकेत हमें देखने को मिल रहा है। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम बहन ने कहा कि महिलाओं को सदा आगे बढ़ने व सीखते रहने के द्वार खुले रखने होंगे, तभी 21वीं सदी का भारत स्वर्णिम भारत कहलायेगा। महिलायें अपने को शिव शक्ति समझें और कठिन परिस्थितियों में हिम्मत से काम लें। इसके साथ ही शिव जयंती के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण भी किया गया व नारी समानता की प्रतिज्ञा भी की।

आत्मा की सुंदरता ही सच्ची सुंदरता

पानीपत-हरियाणा। 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर ज्ञान मानसरोवर के दादी चंद्रमणि यूनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विश्व सुंदरी-(2019-20) डॉ. रागिनी,चीफ मेडिकल ऑफिसर, मेडिकल कॉलेज,खानपुर कलां ने कहा कि सच्ची सुंदरता तो आत्मा की है। जो कि मैंने ब्रह्माकुमारीज़ में आकर सीखा। यहाँ के जिन भी भाई-बहनों को देखती हूँ, हरेक का चेहरा खुशनुमा है। और सच्ची सुंदरता ही यही है। राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण ने कहा कि शिव परमात्मा को सच्चाई पसंद है, इसलिए सत्यम् शिवम् सुंदरम् कहा जाता है। हमें अपने मन को सच्चा एवं पवित्र बनाना है, यही हमारा इस शिवरात्रि पर शिव के प्रति सच्चा समर्पण है, तभी वह भोलानाथ हम पर प्रसन्न होगा। इस अवसर पर विजय भाई,करनाल ने अपने आध्यात्मिक गीतों के द्वारा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। ब्र.कु. बिन्दु बहन,संचालिका,न्यू प्रकाश नगर,पानीपत ने शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य सुनाया। ब्र.कु. रानी बहन,संचालिका, सुखदेव नगर,पानीपत ने अपनी शुभकामनायें दीं। राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी,सर्कल इंचार्ज,पानीपत ने अपने आशीर्वचन दिये और राजयोग का अभ्यास कराया। मंच संचालन ब्र.कु. ज्योति बहन ने किया। इस मौके पर सभी ने मिलकर संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शिव ध्वज लहराया।

स्वयं परमात्मा इस संस्थान द्वारा कर रहे संस्कार परिवर्तन

मुरसान-सादाबाद(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की सादाबाद तहसील संचालिका ब्र.कु. भावना बहन ने कहा कि महाशिवरात्रि पर्व हमें जीवन में आपसी सद्भाव और प्यार से रहने का संदेश देता है। हम सभी जानते हैं कि शिव की बारात में कैसे भिन्न मत-मतांतर वाले होते भी बड़ी एकता के साथ चलते हैं। तो हम भी यही दृढ़ संकल्प लें कि हम आपसी वैर-विरोध, नफरत, घृणा को छोड़कर सभी के साथ सद्भावना और प्रेमपूर्ण व्यवहार करेंगे। पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष गिर्राज किशोर शर्मा ने कहा कि दैवी सृष्टि बनाने के

लिए दैवी संस्कृति चाहिए। संस्कृति में संस्कारों को परिष्कृत किया जाता है और संस्कार परिवर्तन का कार्य ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा स्वयं ज्ञान सागर निराकार परमात्मा शिव आकर कर रहे हैं। मुरसान कोतवाली प्रभारी शिव कुमार शर्मा ने कहा कि वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के लिए जीवन में शक्ति की आवश्यकता है, और वह शक्ति हमें शिव से ही प्राप्त हो सकती है। मुरसान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बबिता ने कहा कि संसार को विकृति से बचाना है तो दैवी संस्कृति को अपनाना होगा। पूर्व चेयरमैन किरण शर्मा ने कहा कि हमारा मन अनंत और अपार शक्तियों का स्वामी है। जब हमारा मन उस सर्वशक्तिमान परमात्मा से जुड़ जाता है तो उसकी शक्तियां जागृत हो जाती हैं। इस अवसर पर 'शिव संदेश शोभा यात्रा' शहर में निकाली गई। मौके पर सब इंस्पेक्टर निशा रानी, डॉ. पंकज अग्रवाल, ब्र.कु. मिथलेश, रामगोपाल बघेल, रामबाबू गुप्ता सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

स्वयं की बुराइयों को भगवान शिव पर अर्पण करना ही सच्ची शिवरात्रि

जम्मू-रेसासी। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में डिप्टी कमिश्नर श्रीमति इन्दु कंवर चिब ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक महिलाओं द्वारा चलाई जा रही संस्था है। जहाँ आकर मैंने स्वयं शांति के प्रकम्पनों का अनुभव किया। ब्रह्माकुमारी संस्थान जो मूल्यों पर आधारित शिक्षा देता है वह आज के समय की आवश्यकता है। डी.डी.सी. चेयरमैन सराफ नाग ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान समाज की निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। हम भी अपने क्षेत्र के युवाओं को इस तरह की सेवा के लिए प्रेरित करेंगे व संस्था की किसी भी तरह की सेवा के लिए हम सदा तत्पर रहेंगे। क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदर्शन दीदी ने स्वयं, परमात्मा तथा सृष्टि चक्र का ज्ञान देते हुए कहा कि परमात्मा सत्य है और हमें अभी सत्य से जुड़कर मन को उसकी शक्तियों से भरपूर करना है, तभी हम दुनिया को बुराइयों से मुक्त कर सकेंगे। वास्तव में स्वयं की बुराइयों को भगवान शिव पर अर्पण करना ही सच्ची शिवरात्रि मनाना है। राजयोगी ब्र.कु. रविन्दर भाई ने कहा कि स्वयं की पहचान भूलने से ही इस दुनिया में बुराइयों की प्रवेशता हुई है। अभी हमें फिर से अपनी सत्य पहचान लेकर स्वयं को शक्तिशाली बनाना होगा। जब हम मानसिक रूप से शक्तिशाली बनेंगे तभी इस विश्व को भी शक्तिशाली बना सकेंगे। ब्र.कु. पल्लवी,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ने सभी का स्वागत किया व संस्था का परिचय दिया। ब्र.कु. रोमल भाई ने सभी का धन्यवाद किया व ब्र.कु. कुसुम लता ने मंच संचालन किया। कार्यक्रम में ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु.अंजू, ब्र.कु.सुषमा, ब्र.कु. सुरिंदर व ब्र.कु. रवि भी उपस्थित रहे।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th April, 2021
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक एवं सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस, डी.बी. कॉर्प.लि.,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।